





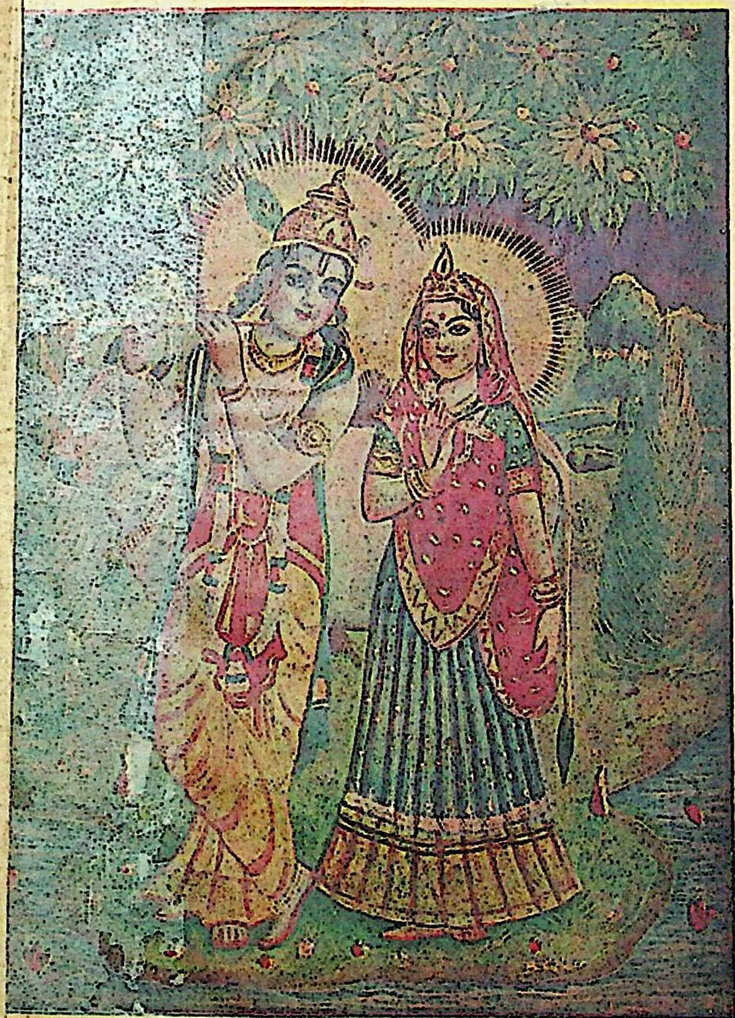
64-





एकादशी माहात्म्य

(भाषा)



प्रकाशक—हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा । मू० १)

॥ श्री एकादशी व्रत कथा ॥

[भाषा प्रारम्भ]



श्री मन्महागणाधिपतये नमः । अथ एकादशी माहात्म्य भाषा प्रारंभ ॥ श्री सूतजी महाराज शौनक आदि ऋषिश्वरों को संबोधित करके कहते हैं कि हे ऋषिश्वरों ! वर्ष के बारह महीनों में २४ एकादशी होती हैं और जिस वर्ष में अधिक मास होता है तब दो विशेष यानी २६ होती हैं । तिनके नाम मैं यहां वर्णन करता हूँ । सावधान होकर सुनो । १ उत्पन्ना [सर्व प्रथम] २ मोक्षदा [मोक्ष देने वाली] ३ सफला [सफलता प्रदान करने वाली] ४ पुत्रदा [पुत्र की प्राप्ति कराने वाली] ५ षट तिला ६ जया, ७ विजया, ८ आमल की, ९ पाप मोचनी, १० कामदा, ११ वरूथिनी, १२ मोहनी १३ अपरा, १४ निर्जला, १५ योगिनी, १६ देव' शयनी

१७ पवित्रा १८ पुत्रदा: १६ प्रबोधनी, २० पद्मा २१ इन्दिरा, २२ पाशाँकुशा, २३ रम्भा, २४ देवोत्थानी । अधिक मास की जो विशेष होती हैं उनके नाम क्रमश पद्मिनी और परमा हैं। इन सब के नाम गुणों के द्योतक है अथवा यों कहो कि इनके जैसे नाम हैं, वैसे ही गुण हैं। जिस प्रकार भगवान् के अंग से उत्पन्न होने के कारण पहली एकादशी उत्पन्न कही गई है तथा चंपक नगराधिपति [राजा वैखानस] [वानप्रस्थी] के पुत्र को मोक्ष देने वाली एकादशी मोक्षदा कहलाई है, इस तरह से सब के नाम उनके गुणोंके अनुसार ही हुये हैं। यह सब आपको एकादशी की कथा के सुनने से ज्ञातहो जायगा। जो कोई मनुष्य इनके व्रत और उद्यापन आदि नहीं कर सकें उन्हें इनके नाम का संकीर्त्तन ही करना चाहिये यह उसी फल को देने वाला होता है, पर करैं श्रद्धासे।

अथ कथा प्रारंभ। सूतजी बोले कि हे

शौनक आदि अट्ठासीहजार ऋषिश्वरो ! श्रीकृ-
ष्णचन्द्र आनन्दकन्द अत्यन्त प्रीतिपूर्वक जो
श्रेष्ठ व्रत आदिक श्री युधिष्ठिर आदि पाँडवों के
सन्मुख वर्णन करने लगे और जिनको मनुष्य यत्न
पूर्वक इस पृथ्वी पर करते हैं। वह अनेक प्रकारके
सुखों को भोगने के पश्चात विष्णु लोक को
प्राप्त होते हैं। अर्जुन बोले कि हे जनार्दन !
इस एकादशी के व्रत का क्या माहात्म्य है ? क्या
पुण्य है और इसके करने की कौनसी विधि
है सो सब कृपा पूर्वक कहिये। तब श्री भक्त
वत्सल भगवान कृष्णचन्द्र ऐसे कहने लगे कि हे
अर्जुन ! हेमन्त ऋतु में और मार्गशिर मास में
कृष्णपक्ष में जब एकादशी आवै अथवा शुक्लपक्ष
में जब एकादशी आवे तब इस व्रत को धारण
करे। याकी विधि इस प्रकार है कि सर्व प्रथम
दशमी के दिन कोई न कोई दृढ़ व्रत करे और
उसी दिन रात्रि के समय में ही दतुअन आदि
करके मुख शुद्धि करे। दिवस के अष्टम भाग

में जब सूर्य भगवान् अस्ताचल की ओर गमन करने लगें उस समय से रात्रि भोजन को त्याग करें। प्रातःकाल होते ही संकल्प नियम के अनुसार कार्य करें। मध्यान्ह काल में अत्यन्त विधि पूर्वक स्नान, नदी, तालाब, बावड़ी आदि में क्रमशः उत्तम, मध्यम और अधम; जैसे शास्त्र में कहे हैं, करके अथवा यदि ये तीनों जलाशय न मिले तो कूप जल से ही स्नान करे। परन्तु जल स्नान के पूर्व मृतिका [मिट्टी] से शरीर की शुद्धि करे। और कहे पृथ्वी माता! तुम मेरे पूर्वजन्म के समस्त पापों को नाश करदो। तुम्हारे द्वारा नाश को प्राप्त भये मेरे पाप छूट जायेंगे और मैं मुक्ति को प्राप्त कर सकूंगा, कहता हुआ समस्त शरीर में मृतिका लेपन करे इसके पश्चात् स्नान द्वारा पुनः शुद्धि करे व्रत के दिन पापी चोर पाखण्डी झूठा और बुराई करने वाले लोगों से भाषण न करे। ब्राह्मण की निन्दा

करने वाले, दुष्ट आचरण करने वाले, अगम्या [माता और भगिनी आदि से अप्रत्यक्ष रूप से गमन करने वाले] पराये द्रव्य के मार लेने वाले और देव धन के खाने वाले पुरुषों के साथ भूलके भी सम्भाषण न करै। यदि इन उपरोक्त पुरुषों में से किसी का दर्शन तक हो जाय तो तुरन्त सूर्य दर्शन करै। फिर नैवध आदिसामिग्रीसेसदा भगवान गोविन्द का पूजन करै रात्रि के समय भक्त सहित दीपदान करके रात्रि भजन आदिमें बितावै। अब व्रत करने वाले को कौन कौन कार्य वर्जित हैं सो सुनो। व्रत वाले मनुष्य को परनिंदा और स्त्री गमन नहीं करना चाहिये।शास्त्रादिकके पठन पाठन में दिन रात्रि व्यतीत करे। रात्रि में जागरण करे और प्रातःकाल ब्राह्मणों को दण्डवत करके दान दक्षिणादि से सन्तुष्ठकरे तथाउनके आशीर्वादद्वारा क्षमायाचना करे। धर्मात्मा मनुष्योंकोशुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष दोनों एकादशी समानरूप से मान्य हैक्यों

कि दोनों में कोई विशेष भेद नहीं है। अब इस व्रत के करनेसे जो फल प्राप्तहोता है सो वर्णन करते हैं। मनुष्य शंखोद्धार नाम क्षेत्र में स्नान के पश्चात गदाधारी भगवान के दर्शन करने से जो फल प्राप्त होता है। उसका माहात्म्य एकादशी व्रत के माहात्म्यके सोलहवें भाग से भी कम समझिये व्यतीपात योग में दान का जो फल है वह एक लाख है तथा संक्रान्ति काल के दान का फल इस व्यतीपात दान से चार गुणों यानी ४ लाख फल है।

चन्द्र और सूर्यग्रहणके समय जो दानादि किया जाता है उसकाकुरुक्षेत्रमेंस्नानकेसमानफलप्राप्तहोता हैऔर हे अर्जुन! इन दोनों का जो फल होता है वह सब अकेले एकादशी व्रतके करने वालेको प्राप्त होता है। क्योंकि एकादशी व्रत का फल अश्वमेघ यज्ञ से सौ गुणा है, जिस मनुष्य के घर एक लाख तपस्वी नित्य भोजन करें तथा इनके भोजन कराने का साठ हजार वर्ष जो फल प्राप्त होता है वह

पुण्य एकादशी व्रत करता पुरुष को प्राप्त होता है। समस्त अङ्ग उपाङ्गों सहित वेदपाठी ब्राह्मणको एक हजार गौदान से जो फल दान देनेवाला पाता है उसका दशगुणा फल एकादशीव्रती को मिलता है। दस ब्राह्मणों को भोजन कराने का जो फल है वही एक ब्रह्मचारी को भोजन कराने का है और इसका दसहजार गुणाफल भूमि के दान करनेका बतलाया है और कन्यादानका फल इससेभी हजारगुना कहा है। कन्यासे दस गुना विद्यादान का फल है और इससे भी दसगुनाफल भूखेप्राणोको अन्नदान करने का है। आजतक संसार में अन्नदान के समान कोई अन्यदान नहींमानागयान मानाजायगाक्योंकि अन्नदान से स्वर्गवासी पितृ और देवताओंकीतृप्ति होती है। परन्तु एकादशी व्रत के पुण्य का फल अकथनीय और संख्यातीत है। ये देवताओं को भी दुर्लभ है। अतः हे पुरुष श्रेष्ठ अर्जुन! रात्रि में भोजन करने वाले और दिन में एकबार भोजन

करने वाले पुरुष को केवल आधेही फलकी प्राप्ति होती है। रात्रि भोजनएक समयाहार औरउपबास इन तानों प्रकार के ब्रतों में से कोई ब्रत अवश्य करना चाहिये। अर्जुन जबतक आदमी के तीर्थ ब्रत फल देने वाले होते हैं तभी तक दान यज्ञ नियमादि भी पूर्ण होते हैं, अन्यथा नहीं। इसी प्रकार यज्ञफल के प्रभाव एकादशी के आने तक ही विद्यमान रहते हैं। यदि हमें पूछतेहोतो आदमी के लिये नाखूनों से जलपान तथा जल के जीव और यहाँ तक कि सूकर इत्यादि का बध करना भी धर्मानुसार वर्जित है, इसे कभी न करे। साथ ही एकादशी को भोजन करना भी वर्जित है अथवा यों कहो कि एकादशी में अवश्य ही उपवास करे। ये ही सर्वोत्तम ब्रत कहे हैं। एकादशी के ब्रत के बराबर हजारों यज्ञों का भी फल नहीं है। अर्जुन बोले, हे भगवन्! आपने जो एकादशी को सर्वोत्तम तिथि बतलाया

वह कैसे, यह सब कथा मेरे सन्मुख कृपा करके कहिये। तब श्रीकृष्ण भगवान ने कहा, हे पार्थ! कृतयुग में मुर नाम का एक बड़ा अद्भुत और महा भयानक राक्षस पृथ्वी पर हुआ। उसनेअपने पराक्रम से इन्द्र तक को जीत लिया। तब इन्द्र ने भगवान शंकर जी से सब वृतान्त कहा कि महाराज! मैं आज सभी देवताओं सहित अपने पद से भ्रष्ट होकर पृथ्वीतल पर मारा मारा फिर रहा हूँ। हे देव! कृपा करके हमारी इस गतिका कारण समझाओ।

हम लोगों की तीनों दशाओं की क्या गति है? तब श्री महादेव जी बोले, हे सुर श्रेष्ठ! देवराज! जहाँ श्री गरुड़ध्वज श्रीविष्णु लोक में विराजमान हैं, वे श्रीजगन्नाथ, संसार पालकअपने शरणागत की रक्षा करने वाले हैं। वहां पर जाने से सब लोगों का कार्य सिद्ध होगा। श्री आशुतोष भगवान के ऐसे सुन्दर बचन सुनकर महामान्य देवराज (इन्द्र) श्री शिवशंकर जी

महाराज को उनके गण और रुद्र गणादि के समेत अपने आगे करके विष्णुलोक को जाते भये, तहाँ विष्णुलोक में श्रीविष्णुभगवानक्षीरसागरके मध्य में सो रहे थे उनको सोते देख श्रीमहादेव जी उनकी ऐसे प्रार्थना करनेलगे,करबद्ध होके महादेव जी बोले हे देवताओं के भी देवता और देवताओं के भी देवता द्वारा स्तुति करने योग्य, मैं आपको नमस्कार करता हूँ, हे दैत्यों के अरि (वैरी) कमल नयन ! हे मधुसूदन ! हमारी रक्षा करो। यहां पर समस्त देवगण दैत्यों के भय से भयभीत मेरे सहित आपकी शरण में आये हैं आप संसार के कर्त्ता और कारक हैं। आप ही संसार के माता और पिता हैं । आप ही में संसार की उत्पत्ति स्थिति और लय होती है। आप ही देवताओं के सहायक हैं आप ही शाँति के करने वाले हैं । आप ही पृथ्वी और आकाश हैं तथा सारे संसार के उपकारक हैं। आप ही स्वयं ब्रह्मा हैं, जो तीनों लोको का पालन कर्त्ता

है, आप ही सूर्य चन्द्र और अग्नि हैं आपकी हव्य (साकल्य) एवं होम तथा आप ही होमी हुई वस्तु,मन्त्र,तन्त्र, तथा जप जयमानऔर यज्ञ सब आप ही हैं और समस्त फलोंके भोक्ताभी आप ही हो। हे देव देवेश आप शरण में आये हुए की रक्षा करने वाले हो। तीनों लोकों में कोई चराचर वस्तु ऐसी नहीं है जिसमें आपका आभास न हो। हे महायोग ! आप हमारी रक्षा करें क्योंकि भयभीत के आप ही एक अवलम्बनमात्र हैं। हम सब देवता दैत्यों के द्वारा जीते गये हैं तथा स्वर्गलोक से भ्रष्ट हो गये हैं। इसलिये जगतस्वामी आज सारे देवता पृथ्वी पर भ्रष्टहोकर विचर रहे हैं इनकी आप ही रक्षा करने वाले हैं। श्री रुद्र भगवान् की ऐसी करुणायुक्त बिनय को सुनकर श्री विष्णु भगवान बोले, हे देवताओं ! ऐसा महा मायाबी कौनसा दैत्य है, जिसने समस्त देवताओं को जीत लिया है। उसका स्थान कहाँ है, उसकानाम क्या है,उसका कौनसा ऐसा आश्रम है,जहाँवहरहता

है, और उसमें ऐसा कौनसा बल है। हे देवराज! तुम निर्भय होकर सब कथा हमसे कहो। भगवान् के ऐसे अमृत तुल्य बचन सुनकर देवराज ने कहा—हे देवेश! हे भक्तों पर कृपा करने वाले! प्राचीन समय में जो नाड़ी जंघ नाम का दैत्य था जो ब्रह्मवंशसे उत्पन्न का महान योधा और देवताओं का बैरी था, उस हुआ पुत्र मुर नाम का अति प्रसिद्ध असुर है, उसकी एक चन्द्रावली नाम की महा नगरी है। उस नगरी में वह दुष्टात्मा बास करता है और अपने पराक्रम से उसने समस्त देवताओंको विजित किया है। उसने समस्त देवताओं इन्द्र, वायु, मरुद्गण आदि को जीत लिया है। वह स्वयं ही अग्नि, इन्द्र, वायु, ईश, सोम नैऋषि आदि को जीतकर सूर्य के समान तेज को प्रकाशित कर रहा है। हे देव! वह तो स्वयं मेघ के समान गर्ज कर मेघ बन बैठा है। हे नाथ! आप कृपा करके उस दुष्ट को जीतकर समस्त देवताओं का हित कीजिये। इन्द्र के ऐसे बचन सुनकर श्री विष्णु भगवान बोले

हे देवताओ ! मैं तुम्हारे शत्रु ओंकाशीघ्रही संहार करूंगा आप सब चन्द्रावती नगरी को जाइये ॥ इस प्रकार भगवान् विष्णु देवताओंसे कहकर उनके पीछे-पीछे चन्द्रावती नगरी को चल दिये उस समय दैत्य पति मुर अनेकों दैत्यों के साथ युद्ध भूमि में गरज रहा था । युद्ध प्रारम्भ होने पर असंख्य दानव अनेकों अस्त्र शस्त्रों को धारण कर देवताओं से युद्ध करने लगे। परन्तु देवता दानवों के आगे एक क्षण भी न ठहर सके । तब भगवान् विष्णु भी युद्धभूमि में आगये । जब दैत्यों ने भगवान विष्णु को युद्ध भूमि में देखा तो उन पर अस्त्र शस्त्रों का प्रहार करने लगे । भगवान् भी चक्र और गदा से उनके अस्त्र-शस्त्रों को नष्ट करने लगे । इस युद्ध में अनेकों दानव सदैव के लियेसोगये परंतुदैत्यों का राजा मुर भगवान् के साथ निश्चल भावसेयुद्ध करता रहा । भगवान विष्णु मुरको मारने के लिए जिन २ शस्त्रों का प्रयोग करते वे सब उसके तेज से नष्ट होकर उस पर पुष्पों के समान गिरने लगे ।

अनेक अस्त्र-शस्त्रोंका प्रयोग करने पर भी भगवान् उसका न जीत सके वह आपसमें मल्लयुद्ध करने लगे। भगवान विष्णु उस दैत्य से सहस्त्र वर्ष तक युद्ध करते रहे परन्तु उस दैत्य को न जीत सके। तब भगवान विष्णु शान्त होकर बिश्राम करनेकी इच्छासे बद्रिकाश्रम चले गये। उस जगह अड़तालीस कोस लम्बी एक द्वार वालीहेमवतीनाम की एक गुफामें शयन करनेके लिये भगवान घुसे।

हे अर्जुन! मैंने उस गुफा में शयन किया। वह दैत्य भी मेरे पीछे २ चला आया मुझको शयन करता देखकर मारनेको तैयार हुआ। वह दैत्य सोचने लगाकिमैं आज अपने चिर शत्रु को मार कर सदैवके लिये निष्कण्टकहो जाऊंगा।उसी समय मेरी देह से एक अत्यन्त सुन्दर कन्या दिव्य अस्त्र धारण करके उत्पन्न हुई और दैत्य के सामने आकर युद्ध करने लगी। तब वह दैत्य आश्चर्यके साथ सोचने लगाकि यह ऐसी बलवान कन्या कहाँ से उत्पन्न हुई है। वह दैत्य इस कन्यासे लगातार

युद्ध करता रहा कुछ समय बीतने पर उस कन्या ने क्रोध में आकर उस दैत्य के अस्त्र-शस्त्रों के टुकड़े टुकड़े कर दिये। उस कन्या ने उसका रथ तोड़ दिया तबतो वह दैत्य महान क्रोध करके उससे मल्ल युद्ध करने लगा। उस कन्या ने उसको धक्का मार कर मूर्छित कर दिया। जब वह दैत्य मूर्छासे जागा तो उस कन्याने उसका शिर काट लिया। वह दैत्य शिर कटतेही पृथ्वी पर गिर गया और मृत्यु को प्राप्त हुआ अन्य समस्त दानव भी ऐसा देखकर पाताल लोक को चले गये। जब भगवान विष्णुकी निन्द्रा टूटी तो उस दैत्य को मरा देखकर अत्यन्त आश्चर्य करने लगेऔर बिचारने लगे इस दैत्यको किसने मारा।तबवह कन्या भगवानसे हाथ जोड़कर बोलीकि हे भगवन्! यह दैत्य आपको मारने को तैयार था तब मैंने आपके शरीर से उत्पन्न होकर इसका बध किया है। इसपर भगवान् बोले हे कन्या तूने इसको मारा है अतः तेरेऊपर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। तूने तीनों लोकोंके देवताओं को सुखी किया

हैइसलिये तू अपनी इच्छानुसार वरदान मांगकन्या बोली हे भगवन् ! मुझे यह वरदान दीजिये किजो मेरा ब्रत करें उनके समस्त पाप नष्टहो जांय और अंत में स्वर्ग लोक को जाँय मेरे ब्रत का आधा फल रात्रिको मिले और उससे आधाफल एक समय भोजन करने बालेको मिले जो मनुष्य भक्ति पूर्वक मेरे ब्रत को करे वे निश्चयहीआपके लोकको प्राप्त करें कृपा करके मुझे ऐसा वर दीजिए। जो मनुष्य मेरे निमित्त दिन तथा रात्रिको एकबार भोजन करे वे धन धान्य से भरपूर रहें। इस पर भगवान विष्णु बोले हे कल्याणि ! ऐसा ही होगा। मेरे और तेरे भक्त एक ही होंगे और वे अन्त में संसार में प्रसिद्धको प्राप्त होकर मेरे लोक को प्राप्त करेंगे हे कन्या ! तू एकादशीको पैदा हुई है इसलिये तेरा नाम भी एकादशी हुआ। जो मनुष्य तेरे इसदिन का ब्रत करेंगे उनके सब पाप नष्ट हो जायेंगे और अन्त समयमें मुक्ति को प्राप्त करेंगे।तू मेरे लिए अब

तीज आठै, नौमी और चौदससे भी अधिक प्रिय है। तेरे व्रत का फल सब तीर्थों के फल से महान् होगा यह मेरा वचन सत्य है। ऐसा कहकर भगवान उसी स्थान पर अन्तर्ध्यान होगये एकादशी भी भगवान के उत्तम बचनोंको सुनकर बहुत प्रसन्न हुई।

हे अर्जुन! सब तीर्थों, दानों ब्रतोंके फलसे एकादशी ब्रतका फल सर्वश्रेष्ठहै। मैं एकादशीब्रत करने वाले मनुष्योंके शत्रुओं को नष्ट करदेता हूँ और उन्हें मोक्ष दिलाताहूँ। उन मनुष्योंके विघ्नों को मैं स्वयं ही नष्टकर देता हूँ अर्जुन यह मैंने तुमसे एकादशी की उत्पत्तिके बारेमें बतलाया है। एकादशी पापोंको नष्ठ करने वाली और सिद्धिको देनेवाली है।उत्तममनुष्योंकोदोनोंपक्षोंकी एकादशियों को समान समझना चाहिये। उनमें भेदभाव मानना उचित नहीं है। जो पुरुष विष्णु भक्त हैं वह धन्य हैं। जोमनुष्य एकादशी माहात्म्यको श्रवण पठन करते हैं उनको अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है विष्णु भक्त मनुष्य जोकि भक्ति पूर्वक कथा सुनते

हैं वे विष्णुलोक को जाते हैं और करोड़ों वर्षों तक उनकी उस जगह पूजा होती है। जो एकादशी माहात्म्य के चौथाई भाग को सुनते हैं उनके ब्रह्म हत्या आदि के महान् पाप नष्ट होजाते हैं। विष्णु धर्म के समान संसार में कोई भी दूसरा धर्म नहीं और एकादशी व्रतके बराबर दूसरा व्रत नहीं है।

अगहन शु०

अथ मोक्षदा एकादशी महात्म्य

श्री युधिष्ठर बोले कि हे भगवन् ! आप तीनों लोकों के स्वामी हैं। सबको सुख देने वाले हैं और जगत के स्वामी हैं। इसलिये मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे देव आप सबके हितैषी हैं इसलिये कृपा कर मेरे संशय को दूर कीजिये। मार्गशीर्ष माह के शुक्लपक्ष में जो एकादशी होती है उसका नाम क्या है। उस दिन कौनसे देवता की पूजाकी जाती है और उसकी विधि क्या है। भगवन् मेरे इन प्रश्नों का विस्तार सहित उत्तर देकर मेरे सन्देह को दूर कीजिये। यह आपकी बड़ी कृपा होगी।

भगवान् कृष्ण बोले ,हेराजन्! आपने अत्यन्तउत्तम प्रश्न किया है इसलिये आपका यश संसारमेंफैलेगा आप ध्यानपूर्वक सुनिये। मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी अनेक पापों को नष्टकरने वाली है। यह मोक्षदाके नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन श्री दामोदर भगवान की पूजा धूप, दीप, नैवेद्य आदि से भक्तिपूर्वक करनी चाहिये। हे राजन्! अब मैं एक पुराण की कथा कहता हूँ। इस एकादशी के व्रत के पुण्य के प्रभाव से नरकमें गये हुये माता,पिता, पुत्रादि को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। इसकी कथा इस प्रकार है ध्यान पूर्वक सुनो। प्राचीन गोकुल नगरमें बैखानस नाम का एक राजा राज्य करताथा। उसके राज्यमें चारोंवेदों के ज्ञाता ब्राह्मणरहतेथे। रात्रिको एक दिन स्वप्न में राजाने अपने पिताको नरकमें पड़ादेखा उसकोस्वप्न का बड़ा आश्चर्य हुआ और प्रातःकाल होते ही वह ब्राह्मणोंके सामने अपनीस्वप्नकथा कहने लगा हे ब्राह्मणो!रात्रिको स्वप्न में मैंने अपने पिता को

नरक में पड़ा देखा और उन्होंने मुझसे कहाकि हे
पुत्र ! मैं अब नरक भोगरहाहूँ मेरीयहाँसेमुक्तिकरो।
जब से मैंने उनके यह बचन सुने हैं तब से मुझे
अशान्ति मिल रही है। मुझे अब राज्य, सुख,
ऐश्वर्य, हाथी घोड़े, धन, स्त्री, पुत्र आदि कुछ भी
सुखदायक प्रतीत नहीं होते हैं। अब मैं क्या करूं त
कहाँ जाऊं ! इस दुःख के कारण मेरा शरीर
तप रहा है। आप लोग मुझे किसी प्रकारके ज
तप,दान,व्रतआदि को बतावें जिससे मेरे पिताजी
को मुक्तिप्राप्त हो। उसउत्तम पुत्रका जीना व्यर्थ है
जो अपने पिता का उद्धार न करे। एक उत्तम पुत्र
जोकि अपने पिता तथा पूर्वजों का उद्धार करे
सहस्र मूर्ख पुत्रों से अच्छा है जैसे एक चन्द्रमा
समस्त जगत् में प्रकाश करदेता है परन्तु उसीप्रकार
हजारों तारे प्रकाश करने में असमर्थ हैं राजा के
ऐसे बचनों को सुनकर ब्राह्मण बोले-हे राजन्! यहाँ
से करीबही,वर्तमान,भूत,भविष्य का ज्ञाता एकपर्वत
नामके ऋषि का आश्रम है। आप यह सब बातें पू

उनसे जाकर पूछ लीजिये। वे आपको इसकी विधि अवश्य बता देंगे।

राजा ऐसा सुनकर मुनि के आश्रम पर गये। उस आश्रम में अनेकों शांतचित्त योगी और महामुनि तपस्या कर रहे थे। उस जगह चारों वेदों के ज्ञाता पर्वत मुनि दूसरे ब्रह्मा के समान बैठे थे। राजा ने जाकर उनको साष्टाँग प्रणाम किया। पर्वत मुनि ने उससे कुशल क्षेम पूछी। तब राजा बोले-हे देवर्षि! आपकी कृपा से मेरे राज्य में सब कुशल है परन्तु अकस्मात एक विघ्न आगया है जिससे मुझे अशान्ति हो रही है। आप कृपाकर मेरे इस संशय को दूर कीजिये। ऐसा सुनकर पर्वत मुनि ने एक मुहूर्त के लिये नेत्र बन्द कर लिये और भूत भविष्य को बिचारने लगे। फिरबोले हे राजन्! मैंने योग बल के द्वारा तुम्हारे पिताके समस्त कुकर्मों का ज्ञान प्राप्त कर लिया है। उन्होंने पूर्वजन्ममें कामातुर होकर सौतके कहनेपर अपनी

दूसरीस्त्रीको ऋतुदानमाँगनेपर भी नहींदिया। उसी पापकर्म के फल से तुम्हारे पिताको नरक भोगना पड़ा है।

तब राजा बोला कि हे मुनीश्वर! मेरे पिताजी के उद्धार के हेतु आप कोई उपाय बताइये। तब पर्वत मुनि बोले—हे राजन्! मार्गशीर्ष मास के शुक्लपक्ष में जो एकादशी होती है उस एकादशीको आप उपवास करें और उस उपवास के पुण्य को अपने पिताको संकल्प छोड़दें। उस एकादशीके पुण्य के प्रभावसे अवश्य ही आपके पिता की मुक्ति होगी। मुनिके बचनों को सुनकर राजा अपने महल को आया और कुटुम्ब सहित मोक्षदा एकादशी का उपवास करने लगा। उस उपवास के पुण्य को राजा ने अपने पिता को दे दिया। उस पुण्य के प्रभाव से राजा के पिता को मुक्ति मिली और स्वर्ग में जाते हुये अपने पुत्र से बोला—हे पुत्र तेरा कल्याण हो यह कहकर स्वर्ग चला गया।

मार्ग शीर्ष मासके शुक्ल पक्ष की मोक्षदा एका

दशी का जो व्रत करता है उनके समस्त पाप नष्ट होजाते हैं और अन्त में स्वर्ग लोक को जाते हैं। इस व्रत से बढ़कर मोक्ष देने वाला दूसरा कोई भी व्रत नहीं है इस कथा को सुनने व पढ़ने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। यह व्रत मोक्ष देने वाला चिन्तामणि के समान कल्याणकारी है।

अथ सफला एकादशी माहात्म्य

युधिष्ठर बोले—हे भगवन्! पौष मास के कृष्णपक्ष की एकादशी का क्या नाम है? उस दिन कौन से देवता की पूजा होती है और उसकी विधि क्या है? यह सब मुझे विस्तार पूर्वक समझाइये। श्रीकृष्ण भगवान बोले-हे राजन्! प्रेमके कारण मैं तुम्हारे प्रश्नों का विस्तार सहित उत्तर देता हूँ। अधिक दान देने वाले की अपेक्षा मैं एकादशी व्रत करने वाले से अधिक प्रसन्न हूँ। अतः अत्यन्त भक्तिपूर्वक व्रत करना चाहिये।

अब इस एकादशी व्रत का महात्म्य सुनो। पौष मास के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम

सफला है। इस एकादशी के देवता नारायण हैं। इस एकादशी को विधि पूर्वक व्रत करना चाहिये और नारायणजी की पूजा करनी चाहिये। जिस प्रकार नागों में शेषनाग पक्षियों में गरुड़जी श्रेष्ठ हैं उसी प्रकार सब व्रतों में एकादशी व्रत सर्व श्रेष्ठ है।जो मनुष्य एकादशी व्रत तथा मेरा पूजन करता है उसे धन्य है सफला एकादशी को नारियल, नीबू, अनार, सुपारी आदि मुझे अर्पण करे और धूप,दीप,पुष्प आदि से मेरी सोलह प्रकार सेपूजा करे उसदिन दीपदान आवश्यक है तथारात्रि को जागरण करना चाहिये। इस एकादशी व्रतके समानयज्ञ तीर्थ तथा दूसराव्रत कोई भी नहीं है। मनुष्यको पाँचसहस्रवर्ष तपस्याकरनेसेजोपुण्यमिलता हैवहपुण्य भक्तिपूर्वक रात्रि जागरण सहितसफला एकादशी का व्रत करने से मिलता है।

हे राजन्! अब सफला एकादशी की कथा ध्यानपूर्वक सुनिये। चम्पावती नगरी में महिष्मान नाम का राजा राज्य करता था। उस राजाके चार

पुत्र थे। उन पुत्रों में सबसे बड़ा लुम्पक नाम का पुत्र महापापी था। वह सदैव पर स्त्री गमन में तथा वेश्याओं के यहाँ अपने पिता का धन नष्ट किया करता था। वह सदैव देवता ब्राह्मण वैष्णव आदि की निन्दा किया करता था। जब उसकेपिता को अपने बड़े पुत्र के बारे में ऐसे समाचार ज्ञात हुये तब उसने उसको अपने राज्यसे निकाल दिया जब लुम्पक सबके द्वारा त्याग दिया गया तब वह बिचारने लगाकि अबमें क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? अन्त में उसने रात्रि को पिता की नगरी में चोरी करके की ठानी। वह दिन में बन में रहने लगा और रात को अपने पिता की नगरी में जाकरचोरी तथा अन्य कुकर्म करने लगा। रात्रिमें वह आकर नगरके आदमियों को मारता तथा तंग करता कुछ दिनों के पश्चात् उसने संपूर्ण नगरी को तबाह कर डाला। उसे पहरेदार पकड़नेपर भी राजाकेभय से छोड़ देते थे। जिस बनमें वह रहता था वहबन

भगवान को अत्यन्त प्रिय था। उस बन में एक बहुत पुराना पीपल का वृक्ष था तथा उस बन को सब देवताओं का क्रीड़ास्थल मानते थे इस वनमें उसी पीपल के वृक्ष के नीचे महापापी लुम्पक रहता था। कुछ दिनों के बाद पोष माह के कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन वह वस्त्रहीन होने के कारण शीत के मारे मूर्छित हो गया। शीत के कारण वह रात्रि को न सो सका और उसके हाथ पैर अकड़ गये। उस दिनवहरात्रिउसकी बड़ी कठिनतासे बीती परन्तु सूर्यनारायण के उदय होने पर भी उसकी मूर्छा न गई।

सफला एकादशीके दोपहर तक वह दुराचारी मूर्छित ही पड़ा रहा। जब सूर्य की गर्मी से उसे कुछ गर्मी मिली तब उसे होश आया और अपने स्थान से उठकर गिरते पड़ते बन में भोजन की खोज में चल पड़ा। उस दिन वह जीवों को मारने में असमर्थ था इसलिये जमीन पर गिरे हुये फलों को लेकर पीपल के वृक्ष के नीचे आया। तब तक

सूर्य भगवान अस्ताचल को प्रस्थान करगये। उसने उन फलों को पीपल की जड़के पास रख दियाओर कहने लगा कि हे भगवन् ! इन फलों से आपही तृप्तहोवें ऐसा कह कर वह रोनेलगा और रात्रि में उसे नींद न आई। उस महा पापीके इस व्रत तथा रात्रि जागरण से भगवान अत्यन्त प्रसन्न हुये और उसके समस्त पाप नष्ट होगये। प्रातःकाल होतेही एक दिव्य घोड़ा अनेकों सुन्दर वस्तुओं से सजा हुआ आया और उसके सामने खड़ा होगया। इसी समय आकाशवाणी हुई कि—हे राजपुत्र ! भगवान नारायण के प्रभाव से तेरे समस्तपाप नष्ट होगये हैं अब तू अपने पिता के पास जाकर राज्य प्राप्तकर। लुम्पक ने जब ऐसी आकाशवाणी सुनीतोवह अत्यन्त प्रसन्न हुआ और सुन्दर वस्त्रों को धारण करने लगा और अपने पिता के पास गया। उसने सम्पूर्ण कथा कह सुनाई और पिताने उसको अपना राज्य भार सौंपकर वन का रास्ता लिया।

अबलुम्पक शास्त्रानुसार राज्यकरनेलगा। उसकी

स्त्री पुत्र आदि भी नारायण के परम भक्त बनगये वृद्धावस्था आने पर वह अपने पुत्र को गद्दी देकर भगवान का भजन करने के लिये बनमें चलागया और अन्त में विष्णुलोक को प्राप्त हुआ।

भक्ति पूर्वक जो मनुष्य सफला एकादशी के व्रत करते हैं उनको अन्त में मुक्ति प्राप्ति होती है। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक सफला एकादशी का व्रत नहीं करते हैं वे पूंछ और सींग से रहित पशुतुल्य हैं। सफला एकादशी के माहात्म्यके पठन व श्रवण से अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

अथ पुत्रदा एकादशी माहात्म्य

धर्मराज युधिष्ठिरने पूछा–हे माधव ! आपने मुझको सफला एकादशी का माहात्म्य विधि सहित कहके कृतार्थ किया है। अब आप पौष मास के व्रत के बारे में समझाइये। उस दिन कौन से देवता का पूजन होता है ? तथा उसकी क्या विधि है।

श्री कृष्ण बोले हे राजन् ! पौष शुक्ल पक्ष

एकादशी का नाम पुत्रदा है। इसका पूजन विधि सहित करना चाहिये ! इस व्रत में भगवान का पूजन करना चाहिये। इस चर और अचर संसार में पुत्रदा एकादशी के व्रतके समान अन्य व्रत नही है उस व्रत के पुण्य से मनुष्य तपस्वी, विद्वान और लक्ष्मीवान होता है। इसकी मैं एक कथा तुम्हें सुनाता हूँ सुनो।

भद्रावती नगरी में सुकेतुमान नाम का राजा राज्य करता था वह निपुत्र था। उसकी स्त्रीकानाम शैव्या था। वह सदैव निपुत्री होनेके कारण चिंतित रहती थी। इस पुत्रहीन राजा के पितर रो रो कर पिण्ड लेते थे और सोचा करतेथेकि इसके बादहमें कौन पिण्ड देगा। इधर राजा को भी बन्धु बान्धव मंत्री, मित्र, राज्य, हाथी, घोड़ा, आदि से सन्तोष नहीं होता था उसका एकमात्र कारण पुत्रहीन होना था वह विचार करता था कि मेरेमरने के बाद मुझे कौन पिण्डदेगा बिना पुत्रके पितरों और देवताओं से उऋण नहीं हो सकते। जिस घर में पुत्र न हो

वहां सदैव अंधेरा ही अंधेरा रहता है इसलिये मुझे पुत्र की उत्पत्ति के लिये प्रयत्न करना चाहिये। जिन मनुष्यों ने पुत्र का मुख देखा है उनको धन्य है और उनको इस लोक में यश और परलोक में गति मिलती है अर्थात् उनके दोनों परलोक ही सुधर जाते हैं। पूर्व जन्म के कर्मों से ही इस जन्म में पुत्र धन आदि मिलते हैं। इस तरह राजा रात दिन इसी चिन्ता से चिंतित रहता था। एक दिन राजा ने अपना शरीर त्याग देने की सोची परन्तु विचार करने लगा कि आत्मघात करना महापाप है। राजा इस तरह मन में विचार कर एक दिन छिपकर बन की ओर चल दिया। राजा घोड़े पर सवार होकर बन में पक्षियों और वृक्षों को देखने लगा- उसने बन में देखा कि मृग, बाघ, सूअर, सिंह, बन्दर सर्प आदि दौड़े फिर रहे हैं। हाथी अपने बच्चों और हथिनियों के बीच में घूम रहे हैं। उस जंगल में राजाने देखा कि कहीं तो सियार कर्कश शब्दसे बोल रहे थे और कहीं उल्लू ध्वनि कररहे हैं।

वन के दृश्यों को देखकर राजा सोच विचार में पड़ गया। उसी सोच विचार में उसके दो पहर व्यतीत हो गये। अब राजा को भूख और प्यास लगने लगी। वह सोचने लगा कि मैंने अनेकों यज्ञ किये हैं और ब्राह्मणों-को मधुर भोजन कराया है परन्तु फिर भी मुझे यह दुख क्यों मिल रहा है।

राजा प्यास के कारण अत्यन्त बेचैन होने लगा और पानी की तलाश में आगे बढ़ा। कुछ ही आगे जाने पर उसे एक तालाब मिला। उस सरोवर में कमल खिल रहे थे। तथा उस सरोवर में सारस हंस, मगर, मच्छ आदि बिहार कर रहे थे। उस सरोवर के चारों तरफ मुनियों के आश्रम थे। उस समय राजा के दाहिने अङ्ग फड़कने लगे। राजा मनमें प्रसन्न होकर सरोवर के किनारेबैठेहुये मुनियों को देखकर घोड़े से उतरा और दंडवत् करके उनके सन्मुख बैठ गया। राजा को देखकर मुनीश्वर बोले हे राजन्! हम तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हैं तुम इस जगह कैसे आये हो सो कहो। इस पर राजा ने

उनसे पूछा—हे मुनिश्वर! आप कौन हैं? औ
किसलिये यहां आये हैं? सो सब कहो। मुनि बो
हे राजन्! आज पुत्र की इच्छा करने वालों
सन्तान देने वाली पुत्रदा एकादशी है। हम लो
विश्वदेव हैं और इस सरोवर पर स्न
करने आये हैं इस पर राजा बोला! हे मुनिश्
मेरे भी कोई सन्तान नहीं है यदि आप मुझ
प्रसन्न हों तो एक पुत्र का वरदान दीजिये। मु
बोला-हे राजन्! आज पुत्रदा एकादशी है अ
इसका अवश्य ही प्रयोग करें। भगवान की कृप
आपके अवश्य ही सन्तान होगी!

मुनि के बचनों के अनुसार राजा ने उस ि
एकादशी का व्रत किया और द्वादशी को उ
परायण किया और मुनियों को प्रणाम करके अ
अपने महल को वापिस आया रानी ने गर्भ
धारण किया और नौ माह के पश्चात् उसके
उत्तम पुत्र रत्न पैदा हुआ। वह राजकुमार अ
न्त वीर, धनवान, यशस्वी और प्रजा पालक हु

श्री कृष्ण भगवान बोले-हे राजन्! पुत्र की प्राप्ति के लिये पुत्रदा एकादशी का व्रत करना चाहिये। जो मनुष्य इसका माहात्म्य श्रवण व पठन पाठन करते हैं उनको स्वर्ग मिलता है।

❀अथ षटतिला एकादशी माहात्म्य ❀

एकसमय दालभ्य ऋषिने पुलस्त्यऋषिसे पूछा हे देव! मनुष्य मृत्युलोक में ब्रह्महत्या आदि महान् पाप करते हैं और दूसरे के धन की चोरी करते हैं दूसरेकी उन्नति देखकर ईर्ष्याकरते है परंतु फिर भी उनको नर्क प्राप्त नहीं होता सो क्या कारण है। वह न जाने कौनसा अल्पदान या अल्प परिश्रम करते हैं जिससे उनके पाप नष्ट होजाते हैं। यह सब आप कृपा पूर्वक मुझसे कहिये। इस पर पुलस्त्यऋषि बोले—हे महाभाग! आपने मुझसे अत्यन्त गम्भीर प्रश्न पूछा है। इससे संसारी जनों को बहुत लाभ होगा। इसको ब्रह्मा विष्णु इन्द्र आदि भी नहीं जानतेपरन्तु

मैं आपको यह गुप्त तत्व अवश्य ही बता हूँ। माघ माह के आने पर मनुष्य को स्ना आदि से शुद्ध रहना चाहिये और इन्द्रियों बस में करके तथा काम, क्रोध, लोभ मोह अभिमान आदि को त्यागकर भगवान का स्म रण करते रहना चाहिये। हाथ, पैर धोकर पु नक्षत्र में गोबर, कपास, तिल मिलाकर क बनाना चाहिये। उन कण्डों को १०८ बार हव करे और यदि उसदिनमूल नक्षत्रहो और द्वाद हो तो नियम से रहे। स्नान आदि नित्य क्रि से शुद्ध होकर भगवान की पूजा कीर्तन कर चाहिये। एकादशी के दिन व्रत करे और रा को जागरण तथा हवन करना चाहिये। दू दिन धूप, दीप, नैवेद्य से भगवान की पू करनी चाहिये। और खिचड़ी का भोग लगा चाहिये। उस दिन कृष्ण भगवान का पूज करना चाहिये। उनको पेठा, नारियल सीताफ सुपारी सहित अर्घ्य देना चाहिये औ

फिर उनकी स्तुति करनी चाहिये। हे भगवान! आप अशरणों को शरण देने वाले हैं आप संसार में डूबे हुए प्राणियों का उद्धार कीजिये। हेपुण्डरीकाक्ष! हे कमल नेत्रधारी! हे विश्व-भगवान्! हे जगतगुरु! आप लक्ष्मी जी सहित मेरे इस तुच्छ अर्घ्य को स्वीकार कीजिये। इसके पश्चात ब्राह्मण को जल भरा कुम्भ प्रदान करना चाहिये। ब्राह्मण को श्यामा गाय और तिल भी देना उत्तम है। तिल स्नान और भोजन दोनों में ही श्रेष्ठ है अतः मनुष्य को तिलदान भी करना चाहिए।

इस प्रकार जो मनुष्य जितने तिल का दान करता है वह उतने ही सहस्र वर्ष स्वर्ग में निवास करता है। १- तिलस्नान २—तिल का हवन ४—तिलोदक ५—तिलकाभोजन ६--तिल का दान यह षटतिला कहलाती है इससे अनेक प्रकार के पाप नष्ट होजाते हैं। नारद ऋषि बोले—हे भगवान्! आपको नमस्कार है। इस

षटतिला एकादशी का क्या पुण्य होता है
इसकी क्या कथा है सो कृपा पूर्वक कहि
श्री कृष्ण भगवान् बोले-हे नारद ! मैं तु
आंखों देखी सत्य घटना कहता हूं ध्यान पू
सुनो। प्राचीनकाल में मृत्युलोक में एक ब्राह्म
रहती थी वह सदैव व्रत करतीथी।एकसमय वह
माहतक व्रत करती रही इससे उसका श
र अत्यन्त दुर्बल होगया था। वह अत्यन्त
मान थी। परन्तु उसने कभी भी देवताओं
ब्राह्मणों को धन तथा अन्न दान नहीं दिया
इस प्रकार मैंने सोचाकि इस ब्राह्मणी ने व्रत
से अपना शरीर शुद्ध कर लिया है और इ
वैष्णव लोक भी मिल जायगा परन्तु इसने
अन्नदान नहीं किया है इससे इसकी तृप्त हो
कठिन है। ऐसा सोचकर मैं मृत्युलोक में
और उस ब्राह्मणी से अन्न मांगा । वह ब्राह्म
बोली-हेमहाराज ! आप यहां किस लिये
हैं। मैंने कहा मुझे भिक्षा चाहिये। इस पर उ

झे एक मृत्पिण्ड दिया। मैं उसे लेकर स्वर्ग लौट आया। कुछ समय बीतने पर वह ब्राह्मणी भी शरीर त्याग कर स्वर्ग आई। मृत्पिण्ड के प्रभाव से उसे उस जगह एक आम गृह मिला परन्तु उसने अपने गृह को अन्य वस्तुओं से शून्य पाया। वह घबड़ाई हुई मेरे पास आई और कहने लगी-हे भगवन्! मैंने अनेकों व्रत आदि से आपकी पूजा की है परन्तु फिर भी मेरा घर वस्तुओं से शून्य है सो क्या कारण है। मैंने कहा-तुम अपने गृह को जावो और देव-स्त्रियाँ तुम्हें देखने आयेंगी जब तुम उनसे षटतिला एकादशी का पुण्य और विधि सुन चुकोगी तब ही द्वार खोलना।

भगवान के वचन सुनकर वह अपने घर को गई और जब देव-स्त्रियाँ आईं और द्वार खुलने लगीं तब वह ब्राह्मणी बोली कि यदि आप मुझे देखने आई हैं तो षटतिला एकादशी का माहात्म्य कहिये। उनमें से एक देव-स्त्री बोली सुनो

मैं कहती हूँ। जब उसने षटतिला एकादशी
माहात्म्य सुना दिया तब उसने द्वार खोला। दे
स्त्रियों ने उसको सब स्त्रियों से अनुपम पाया। उ
ब्राह्मणी ने भी देव स्त्रियों के कहे अनुसार षटति
एकादशीका ब्रत किया औरइसके प्रभावसेउसका
धनधान्य से भरपूर हो गया। अतः मनुष्यों
मूर्खता त्याग कर षटतिला एकादशी का ब्रतकर
चाहिए। इससे मनुष्यों को प्रत्येक जन्म में आ
ग्यता प्राप्त होती है और दरिद्रता नष्ट हो जा
है। इस ब्रत से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट
जाते हैं।

अथ जया एकादशी माहात्म्य

धर्मराज युधिष्ठिर बोले-हे भगवन! आप
माघ माह की कृष्ण पक्ष की षटतिला एकादशी
का अत्यन्त सुन्दर वर्णन किया है। आप सम
जगत्के सृष्टि कर्ता ब्रह्मा, पालक विष्णु और नाश
क शंकरहो। आपकी जयहो! जय हो!! जय हो!!!
अब आप कृपा कर माघ माह के शुल्क पक्ष

एकादशीकी कथाका वर्णन कीजिये। उस एकादशी का नाम क्या है! तथा उसकी विधि और देवता क्या और कौनसा है? सो आप सविस्तार सुनाइए।

श्रीकृष्ण भगवान बोले--रे राजन्! माघ माह की शुक्लपक्षकीएकादशीका नाम जया है। इस एकादशी के व्रत से मनुष्य ब्रह्म हत्याके पाप से छूट जाते हैं और अन्तमें उनको स्वर्ग की प्राप्ति होती है इसकाव्रत करनेसे मनुष्य कुयोनि अर्थात् भूत,प्रेत पिशाच आदि की योनि से छूटजाता है। अतः इस एकादशी के व्रतको विधि पूर्वक करना चाहिए हे राजन्! मैं एक पौराणिक कथा कहता हूं जो पद्मपुराण में इस प्रकार कही है।

एक समय इन्द्र नाग लोक में राज्य करता था वहां अमृत का पान कर नन्दन बनमें अप्सराओं के साथ आनन्द पूर्वक क्रीड़ा किया करता था। एक समय अपनी इच्छानुसार इंद्र अप्सराओं के साथ रमणकर रहाथा वह उन्हें नचाने लगा। उस जगह गंन्धर्व गानकररहेथे।वहां गंन्धर्वों में प्रसिद्ध

पुष्पदन्त उसकी लड़की तथा चित्रसुनकी स्त्री मलि
यह सबथीं।उसजगहमलिनका लड़का पुष्पवान औ
उसका लड़का माल्यवान था। उस समय पुष्पवत
नामक एक गन्धर्व स्त्री माल्यवानको देखकर उ
पर मोहित होगई और कामबाण से चलायमा
होने लगी। उसने अपने रूप, सौंदर्य, हाव, भाव
आदि के द्वारा माल्यवान को वश में कर लिया।
हे राजर्षि! वह पुष्पवती अत्यन्त सुन्दरथी उस
लक्षण यहथे। मुख चन्द्रमा के समान खिला हुआ
था। उसके विशाल नेत्र थे। वह अपने कानों
सुन्दर कुण्डलों को धारण किये हुए थी। उसक
ग्रीवा में सुन्दर हार था। उसके मोटे तथा ऊं
उठे हुए कुच स्वर्ग कलश के समान शोभा दे रहे
उसकापेट तथा कमर अत्यन्त पतलीसिंह के समा
सुन्दरथी। उसके नितम्ब विपुल थे। उसकी जंघाये
मोटी थीं। उसके चरण कमल के समान लालव
के थे। पुष्पवती की ऐसी सुन्दरता को देखक
माल्यवान भी उसके ऊपर मोहित होगया। अतः

दोनों कामदेव के वश में होगये परन्तु फिर भी इन्द्र के बुलाने पर नाचने गाने के लिये जाना पड़ा और अप्सराओं के साथ अपना गाना शुरू किया। यद्यपि वह नाच गारहेथे परन्तु कामदेवके प्रभावसे उनका मन न लगा और अशुद्ध गाना गाने लगे। इनकी भाव भंगियों को देखकर इनके प्रेमको समझ लिया और इसमें अपना अपमान समझ कर इन्द्रने श्राप दे दिया कि मेरी आज्ञा उलंघन करने वाले मूर्खों! तुमने मेरा अपमान किया है तुम लोगों को धिक्कार है इसलिये तुम स्त्री पुरुष के रूप में मृत्युलोक में जाकर पिशाच का रूप धारण करो और अपने कर्मों का फल भोगो।

इन्द्र का ऐसा श्राप सुनकर वे अत्यन्त दुखी हुये और हिमालय पर्वत पर पिशाच बनकर दुःख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने लगे। उन्हें गंध, रस, स्पर्श आदि का कुछ भी ज्ञान नहीं था उस जगह महान दुःख मिल रहे थे। रात दिन में उन्हें एक क्षण भी निद्रा नहीं आती थी उस स्थान

पर अत्यन्त सर्दी थी। जिसके कारण उनके रोमाँच खड़े हो गये थे। उनके दांत सर्दी से कटकटा रहे थे एक दिन पिशाच ने अपनी स्त्री से कहा न मालूम हमने पिछले जन्म में ऐसे कौन से पाप किये हैं जिससे हमें इतनी दुःखदायी यह पिशाच योनि प्राप्त हुई है। इस पिशाच योनि से नर्क के दुःख सहना उत्तम है। उसी प्रकार अनेक विचारों को करते हुये अपना दिन व्यतीत करते थे।

दैवयोग से एक दिन माघ माह के शुल्क पक्ष की जया नामकी एकादशी आई। उस दिन इन दोनों ने कुछ भी भोजन न किया और न कोई पाप कर्म ही किया उसदिन केवल फलफूल खाकर ही दिन व्यतीत किया और महान् दुःख के साथ पीपल के वृक्षके नीचे बैठ गये। उस समय सूर्यनारायण अस्ताचल को जा रहे थे। वह रात्रि इनदोनों ने एक दूसरे से चिपट कर बड़ी कठिनता के साथ काटी। सर्दी के कारण उनको रात्रि में निद्रा भी न आसकी। दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही भगवान

के प्रभाव से इनकी पिशाच देह छूट गई और अत्यन्त सुन्दर अप्सरा और गन्धर्व की देह धारण करके तथा सुन्दर वस्त्रों तथा आभूषणों से अलंकृत होकर नाग लोक को प्रस्थान किया। उस समय आकाश में देवगण तथा गंधर्व उनकी स्तुति करने लगे। नाग लोक में जाकर इन दोनों ने देवराज इन्द्र को प्रणाम किया। इन्द्रभी इनको अपने प्रथम रूपमें देख महान आश्चर्य करने लगा और इनसे पूछने लगा कि तुमने अपनी पिशाच देह से किस प्रकार छुटकारा पाया सो सब बतलाओ। इस पर माल्यवान बोले कि हे देवेन्द्र ! भगवान विष्णु के प्रभाव तथा जया एकादशी के व्रत के पुण्य से हमारी पिशाच देह छूटी है। इन्द्र बोले- हे माल्यवान ! एकादशी व्रत करने से तथा विष्णुके प्रभाव से तुम लोग पिशाच की देह को छोड़कर पवित्र होगये हो और हम लोगों के भी पूजनीय हो गये हो क्योंकि शिव भक्त हम लोगोंके बन्दना करने योग्य है। अतः आपको धन्य है ! धन्य

है ! अब तुम पुष्पवती के साथ जाकर विहार करो। और अपने किए हुए पुन्यों का फल भोगो।

हे युधिष्ठिर ! इस जया एकादशी के व्रत करने से समस्त कुयोनि छूट जाती हैं। जिस मनुष्य ने इस एकादशी का व्रत किया है उसने मानो महायज्ञ तप दान आदि किये हैं। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक जया एकादशी का व्रत करते हैं वे अवश्य ही सहस्र वर्ष तक स्वर्ग में विहार करते हैं।

अथ विजया एकादशी माहात्म्य

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दन ! फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी का क्या नाम है ? तथा उसका माहात्म्य क्या है ? सो सब कृपा पूर्वक कहिये।

श्री कृष्ण भगवान बोले कि हे राज राजेश्वर ! फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम विजया है। उसके व्रत के प्रभाव से मनुष्य को विजय मिलती है। यह सब व्रतों में उत्तम व्रत है।

इस विजया एकादशी के माहात्म्य के श्रवण व पठन से सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

एक समय देवर्षि नारदजी ने जगत्पिता ब्रह्माजी से पूछा कि हे ब्रह्माजी ! आप मुझे फाल्गुन माह के कृष्णपक्ष की विजया नामक एकादशी का व्रत विधान बतलाइये। ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! विजया एकादशी का व्रत प्राचीन तथा नये पापों को नष्ट करने वाला है। इस विजया एकादशी की कथा मैंने आज तक किसीसे भी नहीं कही है। यह समस्त मनुष्यों को विजय प्रदान करती है।

त्रेतायुग में श्रीमर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी को चौदह वर्ष के लिये बनवास होगया तब वह श्रीलक्ष्मणजी तथा माता जानकीजी सहित पञ्चवटी में निवास करने लगे। उस जगह महापापी रावण ने श्री सीताजी को हरण किया। इस दुःख समाचारसे श्री रामजी तथा लक्ष्मणजी अत्यन्त दुःखी हुये और श्रीसीताजी की खोज में चल दिये घूमते २ वे मरणासन्न जटायु के पास जा

पहुँचे। जटायु भी अपनी समस्त कथा सुनाकर स्वर्गलोक को चला गया। कुछ आगे चलकर उनकी सुग्रीव के साथ मित्रता हो गई और बालि का वध किया श्री हनुमानजी ने लँका में जाकर सीता जी का पता लगाया और श्रीरामचन्द्र तथा सुग्रीव की मित्रता का वर्णन किया। वहां से लौट कर हनुमानजी श्रीरामचन्द्रजी के पास आये और सब समाचार कहे। श्रीरामचन्द्रजी ने सुग्रीव की सम्मति लेकर बानरों भालुओं की सेना के सहित लंका को प्रस्थान किया जब श्रीरामचन्द्रजी समुद्र के किनारे पहुँच गये। तब उन्होंने महान अगाध मगर मच्छ से युक्त समुद्र को देखकर श्री-लक्ष्मणजी से कहा--हे लक्ष्मण! इस महान अगाध समुद्र को हम किस प्रकार पार कर सकेंगे?

श्रीलक्ष्मणजी बोले कि हे रामजी! आप आदि पुरुष और मर्यादा पुरुषोत्तम हो। यहां से करीब आधा योजन की दूरी पर कमारी द्वीप में बकदालभ्य नाम के मुनि रहते हैं। आप उनके

पास जाकर इसका उपाय पूछिये। लक्ष्मणजी के बचनों को सुनकर श्रीरामचन्द्रजी बक्दालभ्य ऋषि के पास गये और उनको प्रणाम करके बैठ गये। मुनि ने भी उनको मनुष्य रूप धारण किये हुये पुरुष पुरुषोत्तम समझा और उनसे पूछा--हे रामजी आप कहाँ से पधारे हैं। श्रीरामजी बोले कि हे महर्षि! मैं अपनी सेना सहित यहाँ आया हूँ और राक्षसों को जीतने लंका जा रहा हूं आप इस अगाध समुद्र से पार होने का कोई उपाय बताइये। इसी के लिये मैं आपके पास आया हूँ बक्दालभ्य ऋषि बोले--हे रामजी! मैं आपको एक उत्तम व्रत बतलाता हूँ। फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की विजया एकादशी का व्रत करने से तुम समुद्र से अवश्य ही पार होगे और तुम्हारी विजय होगी हे रामजी! इस व्रत की विधि यह है:—दशमी के दिन स्वर्ण, चाँदी, ताँबा या मिट्टी किसी का एक घड़ा बनवावे। उस घड़े को जल से भरकर तथा उस पर पंच पल्लव रखकर वेदिका पर

स्थापित करे। उस घड़े के नीचे सतनजा (सा
नाज मिले हुये) और ऊपर जौ रखे। उस प
श्रीनारायण भगवान् की स्वर्ण की प्रतिमा स्थापि
करे। एकादशी के दिन स्नान आदि नित्य क
से निवृत्त होकर धूप, दीप नैवेद्य नारियल आ
से भगवान को पूजा करे। उस समस्त दिन
भक्तिपूर्वक घड़े के सामने बैठकर व्यतीत क
और रात्रि को भी उसी तरह बैठे रहकर जा
रण करना चाहिये। द्वादशी के दिन नदी
तालाब के किनारे स्नान कर ब्राह्मणों को दा
देना चाहिये। हे राम ! तुम इस व्रत को सेन
पतिओं के साथ करोगे तो अवश्य ही विज
होगे। श्रीरामचन्द्रजी ने मुनि की आज्ञानुस
विधिपूर्वक विजया एकादशी का व्रत किया औ
इसके प्रभाव से दैत्यों के ऊपर विजय पाई।

अतः हे राजन् ! जो मनुष्य इस व्रत
विधिपूर्वक करेगा उसे दोनों लोकों में विजय प्रा
होगी। श्रीब्रह्माजी ने नारद जी से कहा था

पुत्र ! जो इस व्रत का माहात्म्य सुनता है उसको बाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।

अथ आमल की एकादशी माहात्म्य

मान्धाताजी बोले कि हे वशिष्ठ जी ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो व्रत की कथा कहो जिस से मेरा कल्याण हो। महर्षि वशिष्ठजी बोले कि हे राजन् ! सब व्रतों में उत्तम और अन्त में मोक्ष देने वाला, आमल की एकादशी का व्रत है। यह फागुन माह के शुक्ल पक्ष में होती है। इस व्रत के फल से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इस व्रत का पुण्य एक हजार गौदान फल के समान है। मैं आप से एक पौराणिक कथा का वर्णन करता हूँ उसे सुनो।

एक वैदिक नामक नगर में चैत्ररथ नामक चन्द्रवंशी राजा राज्य करता था। एक समय फागुन शुक्लपक्ष की एकादशी आई। राजा अपनी प्रजा सहित मन्दिरमें जाकर पूर्ण कुम्भस्थापित करके

उसका पूजन करने लगे। वे सब धात्रीकी इसप्रकार स्तुति करने लगे--हे धात्री ! तुम ब्रह्म स्वरूप हो। तुम ब्रह्माजी द्वारा उत्पन्न हो और समस्त पापोंको नष्ट करने वाली हो तुमको नमस्कार है। अब तुम मेरा अर्घ्य स्वीकार करो। तुम श्रीरामचन्द्रजी द्वारा सम्मानित हो। मैं आपकी प्रार्थना करता हूँ। मेरे समस्त पापों का नाश करो।

उस देवालय में रात्रि को सबने जागरण किया रात्रि के समय उस जगह एक बहेलिया आया वह महापापी तथा दुराचारीथा। अपने कुटुम्बका पालन वह जीव हिंसा करके करता था। वह भूख प्यास से अत्यन्त व्याकुल था और इस जागरण को देखने के लिये मन्दिर के एक कौने में बैठ गया। उस जगह विष्णु भगवान की कथा तथा एकादशी माहात्म्य सुनने लगा। इस प्रकार उस बहेलियाने उस समस्त रात्रिको अन्य लोगों के साथ जाग कर व्यतीत की प्रातःकाल होते ही सभी लोग अपने २ घर चलेगये इसी प्रकार वह बहेलिया भी अपने घर चला गया और भोजन किया। कुछ समय पश्चात उस बहेलिया

की मृत्यु हुई और आमल की एकादशी के व्रत तथा जागरण के प्रभाव से उसने राजा विदूरथ के घर जन्म लिया उसका नाम बसुरथ रक्खा गया बड़े होने पर वह चतुरंगी सेना के सहित तथा धनधान्य से युक्त होकर दस सहस्त्र ग्रामों का पालन करने लगा। वह तेज में सूर्य के समान कांन्ति में चन्द्रमा के समान, वीरता में विष्णुभगवान के समान और क्षमा में पृथ्वी के समान था। वह अत्यन्त धार्मिक सत्यवादी कर्मबीर और विष्णु भक्त था। वह अपनी प्रजा का समान भाव से पालन करता था। वह सदैव यज्ञ किया करता था दान देना उसका नित्य का कर्तव्य था। एक दिन वह राजा जंगल में शिकार खेलने के लिये गया। दैवयोग से वह रास्ता भूल गया और दिशाज्ञान न होने के कारण उसी बनमें एक वृक्ष के नीचे सो रहा। उसी समय पहाड़ी मलेच्छ वहाँ आये और राजा को अकेला देखकर उस पर मारो मारो, का शब्द करके टूट पड़े। वह मलेच्छ कहने लगे कि इसी दुष्ट राजा ने हमारे माता, पिता,

पुत्रपौत्रादि सम्बन्धियों को मारा है तथा देश से निकाल दिया है अतः इसे अवश्य मारना चाहिये ऐसा कहकर वह म्लेच्छ राजा को मारने दौड़े और उस पर अस्त्र सस्त्र के प्रहार करने लगे उनके अस्त्र शस्त्र राजा के शरीर पर गिरते ही नष्ट हो जाते और उसको पुष्पों के समान प्रतीत होते उन म्लेच्छोंके अस्त्र शस्त्र उनपर उल्टा प्रहार करनेलगे जिससे वे मूर्छित हो गये। उससमय राजा के शरीर से एक दिव्य स्त्री प्रगट हुई। वहस्त्री अत्यन्त सुन्दर थी तथा सुन्दर वस्त्रों तथा आभूषणोंसे अलंकृतथी। उसकी भौंहें टेढ़ीथीं। उसकी आँखों से लाल २ अग्नि निकल रही थी। वह उस समय दूसरे काल के समान प्रतीत होती थी। वह म्लेच्छों को मारने दौड़ी और समस्त म्लेच्छों को काल के गाल में पहुँचा दिया। जब राजा जगा तब इन म्लेच्छों को मरा हुआ देखकर सोचनेलगा कि इन शत्रुओं को किसनेमारा है। मेरा इस बन में कौन हितैषी रहता है जब वह राजा ऐसा विचार कररहा था तब आकाशवाणी हुई हे राजन्! इस संसार

में तेरी विष्णु भगवान् के अतिरिक्त कौन रक्षा कर सकता है। इस आकाशवाणी को सुनकर राजा अपने नगर को वापिस आ गया और सुख पूर्वक राज्य करने लगा।

महर्षि वशिष्ठजी बोले--हे राजन्! यह सब आमल की एकादशी के व्रत का प्रभाव था। जो मनुष्य इस आमल की एकादशी का व्रत करते हैं वे प्रत्येक कार्य में सफल होते हैं और अन्त में विष्णु लोक को जाते हैं। चैत्र व० ११

अथ पाप मोचनी एकादशी माहात्म्य

धर्मराज युधिष्ठर बोले--हे भगवान्! मैंने फाल्गुन माह की शुक्लपक्ष की एकादशी का माहात्म्य सुना अब आप चैत्र माह के कृष्णपक्ष की एकादशी के बारे में बतलाइये। इस एकादशीका नाम क्या है? इसमें कौनसे देवता की पूजा की जाती है? तथा विधि क्या है? सो सब सविस्तार मुझसे कहिये।

श्रीकृष्ण भगवान् बोले—कि हे राजन्! मान्धाता ने लोमश ऋषिसे पूछाथा कि हे ब्राह्मण!

चैत्रमाह के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या ना
है तथा उसकी विधि क्या है सो सब पूरी तरह
कहिये। लोमश बोला कि हे राजन् ! चैत्रमास
कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम पाप मोचनी
इसके व्रत के प्रभाव से मनुष्यों के अनेक पाप नष्ट
हो जाते हैं। इसकी कथा इस प्रकार है:—

पूर्वकाल में चैत्ररथ नामक एक बन था
उसमें अप्सरायें वास करती थीं। वहाँ हर समय बसंत ऋ
रहती थी अर्थात् उस जगह सदैव प्रत्येक तरह
पुष्प खिले रहते थे। उस जगह गन्धर्व कन्या
किन्नरों के साथ विहार किया करती थीं। उस ब
में इन्द्र अन्य देवताओं के साथ क्रीड़ा किया करता थ
उस बन में एक मेधावी नामक मुनि तपस्या कर
थे। वे शिव भक्त थे! एक दिन मञ्जुघोषा नाम
एक अप्सरा उनको मोहित करने के लिये सित
बजाकर मधुर मधुर गाने लगी। उस समय शिव
शत्रु अनंग (कामदेव) भी शिव भक्त मेधावी मु
को जीतने के लिये तैयार हुये। कामदेव ने उ
सुन्दर अप्सरा के भ्रू को धनुष बनाया। कटाक्ष

उसकी प्रत्यंचा (डोरी) बनाई। उसके नेत्रों को उसने धनुष बनाया और कुचों को कुरी बनाया। उस मञ्जुघोषा अप्सरा को सेनापति बनाया। इस तरह कामदेव अपने शत्रु के भक्त को जीतने को तैयार हुआ।

उस समय मेधावी मुनि भी युवा तथा हृष्ट पुष्ट थे। उन्होंने यज्ञोपवीत तथा दण्ड धारण कर रक्खा था। वे दूसरे कामदेव के समान शोभा देते थे। उन मुनि को देखकर कामदेव के बश में की हुई मञ्जुघोषा ने धीरे-धीरे मधुर वाणी से वीणा पर गाना शुरू किया। मेधावी मुनि भी मंञ्जुघोषा के मधुर गान पर तथा उसके सौंदर्य पर मोहित हो गये। वह अप्सरा उन मुनि को कामदेव से पीड़ित जानकर उससे इस प्रकार आलिंगन करने लगी जिस प्रकार वायु के प्रभाव से लतावृत्त से आलिंगन करती है। वह मुनि उसके सौंदर्य पर मोहित होकर शिव-रहस्य को भूल गये और काम के बशीभूत होकर उसके साथ रमण करने लगे उस मुनि को काम के वशीभूत होने के कारण दिन रात्रि का कुछ भी ध्यान

न रहा और बहुत समय तक रमण करते रहे। ए
दिन मंजुघोषा उस मुनिसे बोली कि हे मुनि! आ
बहुत समय होगया है मुझे स्वर्ग जाने की आ
दीजिये। उस अप्सरा के ऐसे बचनों को सुनक
मुनि बोले कि हे सुन्दरि तू आज इसी सन्ध्या क
आई है अभी प्रातःकाल तक ठहरो। मुनि
ऐसे वचनोंकोसुनकर वह अप्सरा उनके साथ रम
करने लगी और बहुत समय बिता दिया। फि
उसने मुनि से कहा—हे मुनिदेव अबआप मुझे स्व
जाने की आज्ञा दीजिये। मुनि बोले अरी! अ
तो कुछ समय नहीं हुआ है अभी कुछ औ
देर ठहर। इस पर वह अप्सरा बोली हे मुनि
आपकी रात्रि तो बहुत लम्बी है। आप सोचिये कि
मुझे आपके पास आये कितना अधिकसमय होगय
उस अप्सरा के बचनों को सुनकर मुनि को ज्ञान
प्राप्त हुआ और समय का बिचार करने लगे! जब
रमण करने के समय का प्रमाण ५७ साल ७ माह
और ३ दिन का ज्ञात हुआ तो उस अप्सरा को काल
का रूप समझने लगे। वह महान् क्रोधित हुये औ

उस तप नाश करने वाली अप्सरा की तरफ देखने लगे उनके अधर काँपने लगे और इन्द्रियां व्याकुल होने लगी ! वह मुनि उस अप्सरा से बोले-रे दुष्टे मेरे तप को नष्ट करने वाली ! तू अब मेरे श्रापसे पिशाचिनीहोजा। तू महान् पापिनीऔर दुराचारिणी है। तुझे धिक्कार है तेने मेरी तपस्याको नष्टकर दिया

उस मुनि के क्रोध युक्त श्राप से वह पिशाचिनी होगई तब वह बोली हे मुनि ! अब मुझ पर क्रोध को त्यागकर प्रसन्न हो जाओ और इस श्राप का निवारण कीजिये। विद्वानों ने कहा है साधुओं की संगति सुख देने वाली होती है, आपके साथ में मेरे तो बहुत बर्ष व्यतीत हुये हैं। अतः अब आप मुझ पर प्रसन्न हो जाइये। तब मुनिको कुछ शान्ति मिली और उस पिशाचिनी से बोले-रेदुष्टे तूने मेरा बड़ा बुरा किया है परन्तु फिरभी मैं श्राप से छूटने का उपाय बतलाता हूँ। चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की जो एकादशी है उसका नाम पाप मोचनी है उस एकादशी का व्रत करने से पिशाचिनी की देह से छूट जायगी। इस प्रकार मुनिने उसको

समस्त विधि आदि बतलादी और अपने पाप
प्रायश्चित के लिये अपने पिता च्यवनऋषिके
गये। च्यवनऋषि अपने पुत्र मेधावी को देख
बोले रे पुत्र! यह तूने क्या किया। तेरे सम
तप नष्ट होगये हैं। मेधावी बोले-हे पिताजी
बहुत बड़ा पाप किया है आप उससे छूटने का
उपाय बतलाइये। च्यवनऋषि बोले-हे तात!
चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की पाप मोचनी नाम
एकादशी का विधि तथा भक्ति पूर्वक व्रत क
इससे तुम्हारे ये समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे पिता
बचनों को सुनकर मेधावी ऋषि ने पाप मोचनी
दशी का विधि पूर्वक व्रत किया। उसके प्रभाव
उसके समस्त पाप नष्ट हो गये। मंजुघोषा अप्स
भी पाप मोचनी एकादशीका व्रत करनेसे पिशाचि
की देह से छूट गई और सुन्दर रूप धारण
स्वर्ग लोक को चली गई।

लोमशऋषि बोले हे राजन्! इस पाप मोच
एकादशी के प्रभाव से सब पाप नष्ट हो जाते है
इस एकादशी की कथा के श्रवण व पठन से

हजार गौ-दान करने का फल मिलता है। इस व्रत के करने से ब्रह्म हत्या करने वाले, स्वर्ण, चुराने वाले, मद्यपान करने वाले, अगम्या गमन करने वाले आदि के पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्तमें स्वर्ग लोक को जाते हैं।

अथ कामदा एकादशी माहात्म्य

धर्मराज युधिष्ठर बोले कि हे भगवान्! आपको कोटिवार प्रणाम है। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप कृपाकर चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी का वर्णन कीजिये। श्रीकृष्ण भगवान् बोले कि हे राजन्! आप एक पुरानी कथा सुनिये जिस को राजा दिलीप से वशिष्ठजी ने कही थी। राजा दिलीप ने पूछा कि गुरुदेव! चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? उसमें किस देवता की पूजा होती है तथा उसकी विधि क्या है? सो सब आप कृपा पूर्वक कहिये। महर्षि वशिष्ठजी बोले-हे राजन्! चैत्रमाह के शुक्ल पक्ष की एकादशीका नाम कामदा है यह पापों को नष्ट करदेती,

है जैसे अग्नि सूखे काष्ठ आदि को जलाकर नष्ट कर देती है। इसके पुण्य के प्रभाव से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। और पुत्र की प्राप्ति होती है। इसके व्रत से कुयोनि छूट जाती है। और अन्त में स्वर्ग की प्राप्ति होती है अब इसका माहात्म्य कहता हूँ ध्यान पूर्वक सुनो।

प्राचीन काल में एक भोगीपुर नामक नगर था। वहाँ पर अनेक ऐश्वर्यों से युक्त पुन्डरीक नाम का एक राजा राज्य करता था। वहाँ पर अनेकों अप्सरा, गन्धर्व, किन्नर आदि निवास करते थे। उसी जगह ललिता और ललित नाम के दो स्त्री पुरुष अत्यंत वैभवशाली घर में निवास करते हुये विहार किया करते थे। वे दोनों एक दूसरे को बहुत प्रेम करते थे। और आपस में अलग हो जाने पर व्याकुल हो जाते थे।

एक समय राजा पुन्डरीक गन्धर्वों सहित एक सभा कर रहे थे। उस सभा में ललित गन्धर्व भी उनके साथ गाना गा रहा था और उसकी प्रियतमा ललिता उस जगह नहीं थी। इससे वह उसको याद करने के कारण अशुद्ध गाना गाने

लगा। नागराव कर्कोटन ने राजा पुण्डरीक से इसकी चुगली खादी। इस पर राजा पुराडरीक ने ललित को श्राप दे दिया कि अरे दुष्ट ! तू मेरे सामने गाता हुआ भी अपनी स्त्री का स्मरण कर रहा है इससे तू कच्चे मांस और मनुष्यको खाने वाला राक्षस होजा। तू महापापी है, अपने कर्म का अब तू फल भोग। राजा पुण्डरीक के श्राप से वह गन्धर्व उसी समय एक विकराल राक्षस होगया। उसका मुख भयानक होगया। तथा उसके नेत्र सूर्य चन्द्र के समान प्रदीप्त होने लगे। मुंह से अग्नि निकलने लगी उसकी नाक पर्वत की कन्दरा के समान विशाल होगई और गर्दन पहाड़ के समान लगने लगी। उसके शिर के बाल पर्वतों पर उगने वाले वृक्षों के समान दिखाई देने लगे। उसकी भुजायें दो योजन लम्बी होगई इस तरह इसका आठ योजन का शरीरर होगया राक्षस होजाने पर उसको महान दुःखमिलने लगे और अपने कर्म का फल भोगने लगा। जबललिता को अपने प्रियतम ललित का

ऐसा हाल मालूम हुआ तो वह बहुत दुःखी हुई
वह सदा अपने पति के उद्धार के लिये सोचने ल
कि मैं कहां जाऊं और क्या करूं ! आदि ।
राक्षस घोर बनों में रहकर अनेक प्रकार के
करने लगा। उसकी स्त्री ललिता उसके पीछे
जाती और विलाप करती रहती। एक दिन
अपने पतिके पीछे घूमते घूमते विन्ध्याचल पर्व
पर पहुँची। उसने उस जगह शृंगी ऋषि
आश्रम देखा वह शीघ्र ही उस आश्रम के पास ग
और ऋषि के सन्मुख जाकर विनय करने लगी

उसे देखकर शृंगी ऋषि बोले कि हे सुभगे
तुम कौन हो और यहाँ क्यों आई हो ? ललित
बोली—हे मुनि ! मैं वीर धन्वा नामक गन्ध
की कन्या ललिता हूं। मेरा पति राजापुण्डरीक
श्राप से एक भयानक राक्षस होगया है। उससेमु
महान दुःख हो रहा है। आप उस राक्षस योनि
छूटने का कोई उपाय बताइये। तब शृंगी ऋ
बोले-अरी गन्धर्व कन्याललिता। अब चैत्रकी एक

हुई थी उसका नाम कामदा एकादशी है। उसके व्रत करने से मनुष्य के समस्त कार्य शीघ्र ही सिद्ध हो जाते हैं यदि तू उसके व्रत के पुन्य को अपने पति को दे दे तो वह शीघ्र ही राक्षस योनि से छूट जाता और राजा का श्राप शांत होजाता।

मुनि के ऐसे वचनों को सुनकर ललिता ने आनन्दपूर्वक उसका व्रत किया और द्वादशी के दिन ब्राह्मणों के सामने अपने व्रत का फल अपने पतिको देने लगी और भगवान्से इसतरहप्रार्थना-करने लगी—हे प्रभो! मैंने जो यह व्रत किया है उसका फल मेरे पतिदेव को मिले जिससे उनकी राक्षस योनि शीघ्र ही छूट जाय। व्रत का फल देते ही उसका पति राक्षस योनि से छूट गया और पुराने स्वरूप को प्राप्त हुआ। वह अनेक सुन्दर वस्त्रों तथा आभूषणों से अलंकृत होकर पहिले की भाँति ललिता के साथ विहार करने लगा। कामदा एकादशी के प्रभाव से वे पहिले की भांति अब अधिक सुन्दरहोगये और पुष्पकविमान पर बैठकर स्वर्गलोक को चले गये।

हे राजन्! इस व्रत को विधि पूर्वक करने मनुष्यों के सारे पाप नष्ट होजाते हैं। इस व्रत मनुष्य ब्रह्महत्यादि के पाप और राक्षस आदि योनि से छूट जाते हैं। संसार में इसके समान कोई दूसरा व्रत नहीं है। इसकी कथा व माहात्म्य के श्रवण व पठन से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।

अथ वरूथिनी एकादशी माहात्म्य

धर्मराज युधिष्ठिर बोलेकि हे भगवन्! वैशाख माहके कृष्णपक्ष की एकादशी का क्या नाम है तथा उसकी विधि क्या है और उससे कौनसे फल की प्राप्ति होती है सो कृपा पूर्वक मुझसे कहिये।

श्रीकृष्ण भगवान बोले—हे राजन! वैशाख माह के कृष्णपक्षकी एकादशी का नाम वरूथिनी है। यह सौभाग्य की देने वाली है। इसके व्रत से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में सुख प्राप्त होता है। यदि इस व्रतको एक अभागिनी स्त्री भी करती है तो उसे सौभाग्यमिलता है वरूथिनी के व्रतके प्रभावसे ही राजा मान्धाता

स्वर्ग को गया था । इसी तरह धुन्धुमार आदि भी स्वर्ग को गये थे । वरूथिनी एकादशीके व्रतकाफल दश हजार वर्ष तपस्या करनेके फलके समान है । कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के समय जो एकभार स्वर्ण दान करनेसे जो फल मिलता है वहीं फल बरुथिनी एकादशी के व्रत करने से मिलता है इस एका-दशी के व्रत से मनुष्य इस लोक और परलोक दोनों लोकों में सुख भोगते हैं और अन्त में स्वर्ग को जाते हैं ।

हे राजन् ! इस एकादशी का व्रत करने से मनुष्य इस लोक में सुख और परलोक में मुक्ति दोनो मिलती हैं । शास्त्रों में कहा गया है कि हाथी का दान घोड़े के दान से उत्तम है और हाथी के दान से भूमि का दान श्रेष्ठ है उससे उत्तम तिलों का दान है । तिल से स्वर्ण दान, स्वर्ण से अन्न श्रेष्ठ है । संसारमें अन्न दानकेबराबर कोई भी दान नहीं है । अन्नदानसे पितर देवता मनुष्य आदि सब संतुष्ट होजाते हैं । शास्त्रोंमें कन्या दान भी इसके बराबर मानागया है।बरूथिनीएकादशीके

व्रत से अन्न तथा कन्यादान का फल मिलता जो मनुष्य लोभके वश में होकर कन्या का धन लेते हैं वे प्रलयके अन्त तक नरक में पड़े रहते या उनको अगले जन्ममें बिलाव का जन्म ग्रह करना पड़ता है। जो मनुष्य प्रेम अथवा ध सहित कन्यादान करते हैं उनके पुण्यको चित्रगु भी लिखने में अपने को असमर्थ पाते हैं। ज मनुष्य इस बरूथिनी एकादशी का व्रत करते उनको कन्यादान का फल मिलता है।

बरूथिनी एकादशी का व्रत करने वाले क दशमी के दिन से निम्नलिखित दस वस्तुओं क त्याग देना चाहिये--

१–कांसे के वर्तनों में भोजन करना, २–मांस, ३–मसूर की दाल, ४– चना, ५–कोदों, ६–शाक, ७–मधु (शहद), ८–दूसरे का अन्न, ९–दूसरी बार भोजन करना, १०–स्त्री संग या अन्य किसी के साथ मैथुन करना।

उस दिन जूआ नहीं खेलना चाहिये तथा शयन नहीं करना चाहिये। उस दिन पान खाना, दांतुन

करना, दूसरे की नदा करना तथा चुगली खाना और पापियों के साथ बातचीत नहीं करना चाहिये। उस दिन क्रोध तथा मिथ्या भाषण का त्याग कर देना चाहिये इस व्रत में नमक तेल तथा अन्न बर्जित है।

हे राजन् ! जो मनुष्य उस एकादशी को विधि पूर्वक व्रत करते हैं उनको स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है। अतः मनुष्य को पापों से डरना चाहिये और जो मनुष्य यमराज से डरते हैं उनको इस बरूथिनी एकादशीका विधिपूर्वकव्रत करना चाहिये इस व्रतके माहात्म्य को पढने से एक हजार गोदान का फल प्राप्त होता है तथा इसका फल गङ्गा के स्नान करने के फल से भी अधिक है। वै॰ मासशुक्ल

❀ अथ मोहिनी एकादशी माहात्म्य ❀

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दन ! बैशाख मास के शुक्लपक्ष की एकादशी का क्या नाम है तथा उसकी क्या कथा है ? तथा उसका व्रत करनेकी कौनसी विधि है ? सो सब बिस्तार पूर्वक

मुझ से कहिये।

श्रीकृष्णजी बोले कि हे धर्म नन्दन! मैं आपसे एक कथा कहता हूँ जिसे वशिष्ठजी ने श्रीरामजी से कहा था। श्री रामजी बोले हेगुरुदेव! आप मुझे कोई ऐसा व्रत कहिये जिससे सब पाप और दुःख नष्ट होजाँय। मैंने सीताजी के वियोग में बहुत दुख भोगे हैं अतः अब कोई व्रत बतलाइये।

वशिष्ठजी बोले हे राम! आपने बहुत ही सुन्दर प्रश्न किया है। आपकी बुद्धि अत्यन्त शुद्ध और पवित्र है। आपके नाम स्मरण से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है इसलिये आपका यह प्रश्न लोक हित में अवश्य आयेगा! बैशाख माह के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी होती है उसका नाम मोहिनी है। इस एकादशी का व्रत करने से मनुष्य के सब पाप व दुःख छूट जाते हैं। इसके व्रत के प्रभाव से मनुष्य मोह जाल से छूट जाता है। अतः हे राम! इस एकादशी का व्रत

दुखी मनुष्यों को अवश्य करना चाहिये । मोहिनी एकादशी के व्रत से मनुष्यों के सब पाप व दुःख नष्ट हो जाते हैं ! अब आप इसकी कथा ध्यान से सुनिये ।

सरस्वती नदी के किनारे एक भद्रावती नाम की नगरी है । उसमें सोम बंशीय घृतमान नाम का राजा राज करता था । उसी में धन धान्य से पूर्ण. पुण्यवान् एक वैश्य रहता था । उसका नाम धनपाल था ! वह अति धर्मात्मा तथा विष्णु भक्त था । उसने नगर में अनेकों भोजनालय, प्याऊ, कूआ, तालाब, धर्मशाला आदि बनवाये । सड़कों के किनारे आम, जामुन नीम आदि के वृक्ष लग वाये । उसके पाँच पुत्र थे सबसे बड़ा पुत्र अत्यन्त पापी था । वह वैश्याओं और गुन्डों की संगति करता था । अपना दिन जूआ खेलने में बिताता था । स्त्रियों के साथ भोग करता था । वह महान् नीच था और देवता, पितृ आदि को नहीं मानता था । अपने पिता के धन

को बुरे व्यसनों में खर्च करता था। वह शराबी तथा मांसाहारी था। वेश्याओं के साथ उनके गले में हाथ डालकर घूमा करता था। इससे उसे पिता, भाई और कुटम्बियों ने घर से निकाल दिया और उसकी निन्दा करने लगे।

घर से निकाल देने के बाद वह गहनों तथा वस्त्रों को बेचकर रहने लगा। धन नष्ट हो जाने पर वैश्याओं ने तथा गुन्डों ने उसका साथ छोड़ दिया। अब वह भूख प्यास से दुःखी रहने लगा। अब उसने चोरी करने का बिचार किया और रात्रि में चोरी करने लगा। एकदिन वह पकड़ा गया परन्तु सिपाहियों ने वैश्य का पुत्र जान कर छोड़ दिया। वह दूसरी बार फिर पकड़ा गया तथा राजा ने उसे कारागार में बन्द कर दिया और बहुत दुःखदिये तथा उससेनगरछोड़नेकोकहाअन्तमें वह दुःखीहो नगरीको छोड़गया और जङ्गलमें रहने लगा। जङ्गल में पशु पक्षियों को मार मार कर खाने लगा। फिर वह बहेलिया बन गया और

धनुषबाणसे पशुपक्षियोंको मार-मार करखाने लगा।

एक दिन वह पापी भूख प्यास से व्याकुलहो खाने की खोज में निकला और कोठिन्य ऋषि के आश्रम में आ पहुँचा। उस समय बैशाख का महीना था। कोठिन्य ऋषि गङ्गास्नान करके आये थे। उनके भीगे वस्त्रों के छींटों से इसे कुछ सुबुद्धि प्राप्त हुई। वह पापी मुनि के पास जा हाथ जोड़ कर कहने लगा—हेमुनि! मैंने जीवन में बहुत पाप किये हैं आप उनसे छूटने का कोई सरल और बिना धन का उपाय बतलाइये! तब ऋषि बोले कि तू ध्यान देकर सुन बैशाख के शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत कर। इसका नाम मोहनी है। जिसका व्रत करने से सब पाप नष्ट हो जावेंगे। मुनि के वचनों को सुन वह बहुत खुश हुआ और मुनि की बतलाई बिधि से मोहनी एकादशी का व्रत किया।

हे रामजी! उस व्रत के प्रभाव से उसके सब पाप नष्ट हो गये और अन्त में गरुड़ पर चढ़कर

विष्णुलोक को गया। इस व्रत से मोह आदि भी नष्ट हो जाते हैं। संसार में इस व्रत से अन्य कोई श्रेष्ठ व्रत नहीं है। इसके माहात्म्य के श्रवण व पठन से जो पुण्य होता है वह एक सहस्र गौ दान के बराबर है।

अथ अपरा एकादशी माहात्म्य

श्रीयुधिष्ठर बोले हे भगवन्! ज्येष्ठ के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है तथा उसका माहात्म्य क्या हे? सो कृपा कर कहिये श्री कृष्ण जी बोले हे राजन्! ज्येष्ठ के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम अपरा है। क्योंकि यह अपार धन देने वाली है। यह पुण्य को देने वाली और पापों को नष्ट करने वाली है जो मनुष्य इस का व्रत करते हैं उनकी इसलोकमें प्रसिद्ध होती है।

अपरा एकादशी के व्रत के प्रभाव से ब्रह्महत्या भूत योनि, दूसरे की निन्दा आदि के पाप नष्टहो जाते हैं। इसके व्रत से पर स्त्री के साथ भोग करने

बालों के पाप, झूठी, गवाही, असत्य भाषण, झूठा वेद पढ़ना, झूठा शास्त्र बनाना, झूठा ज्योतिषी और झूठा वैद्य आदि सबके पाप नष्ट हो जाते हैं। जो क्षत्री युद्ध से भाग जाय तो नर्क को जाते हैं परन्तु अपरा का व्रत करने से उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है। जो शिष्य गुरु से विद्या ग्रहण करते हैं परन्तु बाद में उनकी निन्दा करते है तो अवश्य नरक में जाते हैं वह भी अपरा का व्रत करने से स्वर्ग को जाते है।

जो फल तीनों पुष्करों में स्नान करने से या कार्तिक मास में स्नान करने से, अथवा गंगाजीके तट पर पित्तरों को पिण्ड दान करने से मिलता हैं वही फल अपरा का व्रत करने से मिलता है। सिंह राशि वालों को बृहस्पति के दिन गोमती में स्नान करने से, कुम्भ में श्रीकेदारनाथजी के दर्शन से तथा बद्रिकाश्रम में रहने से तथा सूर्य चन्द्र ग्रहण में कुरुक्षेत्र में नहाने से जो फल मिलता है वह फल अपरा के व्रत के बराबर है।

हाथी घोड़े के दान से तथा यज्ञ में स्वर्ण दान से जो फल मिलता है। वह अपरा के व्रत के फल के बराबर है। हाल की ब्याई हुई गाय भूमि या स्वर्ण के दान का फल भी इसके फल के बराबर होता है। यह व्रत पाप रूपी वृक्षों के काटने को कुल्हाड़ी के समान है और पाप रूपी काष्ठ के लिये अग्नि के समान है।

यह अपरा का व्रत पाप रूपी अन्धकार के लिये सूर्य के समान है तथा पाप रूपी मृग के लिये सिंह के समान है। यह जीवन पानी के बुद-बुदे के समान है। अतः मनुष्य को एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिये। यह व्रत सब व्रतों में श्रेष्ठ है अपरा के दिन भक्ति पूर्वक श्री विष्णु का पूजन करना चाहिये जिससे अन्त में विष्णु पद की प्राप्ति होती है।

हे राजन! मैंने यह अपरा की कथा लोक हित के लिये कही है। उसके पढ़ने व सुनने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

अथ निर्जला एकादशी माहात्म्य

भीमसेन बोले—हे पितामह ! भ्राता युधिष्ठिर, माता द्रौपदी, अर्जुन, नकुल और सहदेव एकादशी के दिन व्रत करते हैं और मुझसे भी अन्न खाने को मना करते हैं। मैं उनसे कहता हूँ कि भाई ! मैं भक्ति से भगवान की पूजा कर सकता हूँ और दान दे सकता हूँ पर एकादशी को भूखा नहीं रह सकता। इस पर व्यासजी बोले—हे भीम ! यदि तुम नरक को बुरा और स्वर्ग को अच्छा समझते हो, तो प्रत्येक माह की दोनों एकादशियों को अन्न न खाया करो। इस पर भीम बोला—हे पितामह ! मैं आपसे प्रथम कह चुका हूँ कि मैं एक दिन भी भूखा नहीं रह सकता फिर मेरे लिये पूरे दिन का उपवास करना कितना कठिन है ? मेरे पेट में अग्नि का वास रहता है जो अधिक अन्न खाने पर शान्त होती है यदि मैं प्रयत्न करूं तो एक व्रत अवश्य कर सकता हूँ अतः आप

मुझे कोई ऐसा व्रत बतलाइये। जिससे स्वर्ग प्राप्ति हो।

व्यासजी बोले—हे भीम बड़े-बड़े ऋषि और महर्षियों ने बहुत से शास्त्र बनाये हैं। यदि कलियुग में मनुष्य उन पर आचरण करे तो अवश्य मुक्ति को प्राप्त होता है। उनमें धन बहुत कम खर्च होता है। उनमें से जो पुराणों का सार है कहता हूँ। मनुष्य को दोनों पक्षों की एकादशियोंकाव्रतकरनाचाहिये।इससेस्वर्गकीप्राप्तिहोतीहै।

व्यासजी के बचनों को सुन भीम नरक में जाने के कारण अत्यन्त डरे और लता के समान काँपने लगे। वह बोले—हे पितामह! अब मैं क्या करूँ। क्योंकि मुझसे व्रत नहीं हो सकता। अतः मुझे एक ही व्रत बतलाइये। जिससे मुक्ति हो जाय। इस पर व्यासजी बोले—हे भीम! कृष्णऔरमिथुन संक्रातिकेमध्यमेंज्येष्ठकी शुक्लपक्ष कीएकादशीहोतीहैं उसकानिर्जलाव्रतकरनाचाहिये।

इसके व्रत में स्नान व आचमन में जल वर्जित नहीं है। लेकिन आचमनमें ६ माशे से अधिकनहीं लेना चाहिये। इस आचमन से शरीर की शुद्धि होजाती है। आचमन में ६ माशेसे अधिक जल मद्यपान के समान है। इस दिन भोजन नहीं करना चाहिये क्योंकि भोजन करने से व्रत नष्ट हो जाता है।

यदि सूर्योदय से सूर्यास्त तक मनुष्य जलपान न करे तो उससे बारह एकादशी के फल की प्राप्ति होती है। द्वादशी के दिन सूर्योदय से पहले ही उठना चाहिये और स्नान करके ब्राह्मणों को यथा योग्य दान देना चाहिये। इसके बाद भूखे ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिये। तत्पश्चात्स्वयं भोजन करना चाहिये। उसकाफल एक बर्ष की सब एका दशियों के फल के बराबर है। हे भीम! स्वयं भगवान् ने मुझ से कहा था कि इस एकादशी का पुण्य सब तीर्थों और दानों के बराबर है। एक दिन निर्जल रहने से मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है। जो मनुष्य निर्जला एकादशीका व्रत

करते हैं उनको मृत्युके समय भयानक यमदूत नहीं दीखते हैं। उस समय श्री विष्णु के दूत स्वर्ग से आते हैं और उसे विमान पर बिठाकर स्वर्ग को ले जाते हैं। अतः संसार में सबसे श्रेष्ठ निर्जला एकादशी का व्रत है।

अतः यत्न से इस एकादशी का निर्जल व्रत करना चाहिये। उस दिन "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का उच्चारण करना चाहिये। उस दिन गौ का दान करना चाहिये। व्यासजी के ऐसे वचन सुन उसने निर्जल व्रत किया। इसी एकादशी को भीमसेनी या पाण्डव एकादशी कहते हैं। निर्जल व्रत करने से पहले भगवान् की पूजा करनी चाहिये और उनसे विनय करनी चाहिये कि हे भगवान्! आज मैं निर्जल व्रत करता हूँ इसके दूसरे दिन भोजन करूंगा। मैं इस व्रत को श्रद्धा पूर्वक करूंगा इससे मेरे सब पाप नष्ट हो जाते हैं। इस दिन एक घड़ा वस्त्र से ढककर स्वर्ण सहित दान करना चाहिये।

जो मनुष्य इस व्रत को प्रहर-प्रहर में स्नान तप आदि करके करते हैं उनको करोड़ पल स्वर्ण दान का फल मिलता है। जो मनुष्य इस दिन यज्ञ होमादि करते हैं उनका फल वर्णन नहीं हो सकता। इस निर्जला एकादशी व्रत से मनुष्य विष्णुलोक को जाते हैं। जो मनुष्य इस दिन अन्न खाते हैं उन्हें चान्डाल समझना चाहिये। वे अन्त में नर्क में जाते हैं। ब्रह्महत्यारे, शराबी, चोर, गुरुद्रोही और झूंठ बोलने वाले इस व्रत का करने से स्वर्ग को जाते हैं।

हे कुन्ती पुत्र! जो पुरुष या स्त्री इस व्रत को श्रद्धा से करते हैं उनका यह कर्त्तव्य हैकि सर्व प्रथम श्री विष्णु की पूजा करनी चाहिये। तत्पश्चात् गौ-का दान करना चाहिये। उसदिन ब्राह्मणोंकोदक्षिणा मिष्ठान आदि देना चाहिये। निर्जला के दिन अन्न, वस्त्र, छत्र, उपाहन आदि का दान करना चाहिये। जो मनुष्य इस कथा को भक्ति से सुनते व पढते हैं उनको स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

अथ योगिनी एकादशी माहात्म्य

युधिष्ठिर बोले—हे प्रभो ! मैंने ज्येष्ठ के शुक्ल पक्ष की निर्जला एकादशी की कथा सुनी। अब आप आषाढ़ के कृष्ण पक्ष की एकादशी की कथा का वर्णन कीजिये। इसका नाम क्या है तथा माहात्म्य क्या है ? सब वर्णन कीजिये। श्रीकृष्ण जी बोले—हे राजन् ! आषाढ़ के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम योगिनी है। इसके व्रत से सब पाप नष्ट हो जाते हैं यह लोक में भोग तथा परलोक में मुक्ति देने वाली है। हे राजन् ! यह एकादशी तीनों लोकों में प्रसिद्ध है इस व्रत से पाप नष्ट हो जाते हैं। मैं आपसे एक पुराणों की कही कथा कहता हूँ ध्यान से सुनो।

अलकापुरी नगरी में कुवेर नाम का राजा राज्य करता था। वह शिव भक्त था उसकी पूजा को हेम माली पुष्प लाया करता था। उसके विशालाक्षी नामकी अत्यन्त सुन्दर स्त्री थी

एक दिन वह मानसरोवर से पुष्प ले आया पर कामासक्त होने से पुष्पों को रख स्त्री से रमण करने लगा और दुपहर तक न गया। जब राजा को राह देखते-देखते दुपहर हो गया तो उसने क्रोध पूर्वक सेवकों को आज्ञा दी कि तुम जाकर हेम माली का पता लगाओ वह अभी तक पुष्प क्यों नहीं लाया। जब यक्षों ने उसका पता लगा लिया तो वह कुवेर के पास आकर कहने लगे—हे राजन्! वह माली अभी तक स्त्री से रमण कर रहा है। यक्षों की बात को सुन कुवेर ने माली को बुलाने की आज्ञा दी। माली राजा के सन्मुख डर से कंपकपाता हुआ आया। उसे देख कर राजा को बड़ा क्रोध आया और होंठ फड़-फड़ाने लगे। उसने कहा—रे पापी! नीच कामी! तूने मेरे परम पूजनीय ईश्वरों के भी ईश्वर शिवजी का अनादर किया है इसस मैं तुझे श्राप देता हूँ कि तू स्त्री का वियोग भोगेगा और मृत्युलोक में जाकर कोढ़ी होगा।

श्राप के प्रभाव से वह उसी क्षण स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा और कोढ़ी हो गया। उसकी स्त्री भी अन्तर्ध्यान हो गई। मृत्युलोक में आकर उसने महान् दुःख भोगे। परन्तु शिवजी की भक्ति के प्रभाव से बुद्धि मलीन न हुई और पिछले जन्मकी भी सुध रही। वह अनेक दुःखों को भोगता तथा पूर्व जन्म के कुकर्मों का स्मरण करता हुआ हिमालय की तरफ चल दिया। चलते-चलते मार्कण्डेय के आश्रम में पहुँचा। वह ऋषि अत्यन्त बृद्ध तथा तपशाली थे। दूसरे ब्रह्मा के समान दीख रहे थे। उनका आश्रम ब्रह्म की सभा के समान शोभा दे रहा था। उनको देख कर वह माली वहां गया और प्रणाम करके उनके चरणों में गिर पड़ा।

उनको देख कर ऋषि बोले-तूने कौन से कर्म किये हैं जिससे तू कोढ़ी हुआ दुःख भोग रहा है। इस पर माली बोला-हे मुनि! मैं कुवेर का सेवक हूँ। मेरा नाम हेम है। मैं राजा की

पूजा के लिये नित्य पुष्प लाया करता था। एक दिन मुझे स्त्री बिहार करते देर हो गई और दुपहर तक पुष्प लेकर न पहुँचा उन्होंने मुझे श्राप दिया कि तू स्त्री का बियोग भोग और मृत्युलोक में जाकर कोढ़ी बन तथा दुःख भोग। इससे मैं कोढ़ी हो गया हूं और दुःख भोग रहाहूँ। अतः आप ऐसा उपाय बतलाइये जिससे मेरी मुक्ति हो।

ऋषि बोले—भाई! तूने मेरे सन्मुख सत्य बचन कहे हैं मैं तेरे उद्धार के लिये एक व्रत बताता हूँ। यदि तू आषाढ़ के कृष्ण पक्ष की योगिनी नामक एकादशी का बिधि पूर्वक व्रत करेगा तो तेरे सब पाप नष्ट हो जावेंगे। इस पर हेम माली बहुत प्रसन्न हुआ और मुनि के बचनों के अनुसार योगिनी एकादशी का विधि पूर्वक व्रत किया। इसके प्रभाव से वह फिर पुराने रूप में आ गया और अपनी स्त्री के साथ बिहार करने लगा।

हे राजन! इस योगिनी की कथा का फल

अट्ठासी सहस्र ब्राह्मणों के भोजन कराने के बराब
है। इसके व्रत से समस्त पाप दूर हो जाते हैं औ
अन्त में स्वर्ग मिलता है।

अथ देवशयनी (पद्मा) एकादशी माहात्म्य

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन् आषाढ़
मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है
और उस दिन कौनसे देवता की पूजा होती हैं तथ
उसकी विधि क्या है सो सब विस्तार पूर्वक कहिये।
श्री कृष्ण भगवान् बोले कि हे राजन्! एक समय
नारदजी ने ब्रह्माजी से भी यही प्रश्न पूछा था
तब ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! तुमने कलयुगी
जीवों के उद्धार के लिये सबसे उत्तम प्रश्न किया है
क्योंकि एकादशी का व्रत सब व्रतों से श्रेष्ठ है इसके
व्रतसे समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इस एकादशी
का नाम पद्मा है। इसके व्रत करने से विष्णु भगवान्
प्रसन्न होते हैं। मैं यहाँ एक पौराणिक कथा कहता
हूँ ध्यान पूर्वक सुनो।

ध्यानसेसुनो--सूर्यबंशी मान्धातानामकएक राजाथथा सत्यवादी प्रतापी और चक्रबर्ती था। वह अपनी प्रजा का पुत्र की तरह पालन किया करता था।। उसकी समस्त प्रजा धन धान्य से परिपूर्णथी और सदैव सुख से रहती थी। उसके राज्य में कभी अकाल नहीं पड़ा था।

एक समय उस राजा के राज्यमें जल न बरसा जिस से राज्य में अकाल पड़गया और प्रजा अन्न की कमी के कारण अत्यन्त दुखी रहने लगी। राज्यमें यज्ञ होना आदि बन्द हो गये एकदिन प्रजा राजा के पास जाकर प्रार्थना करने लगी कि हे राजन्! समस्त विश्व की सृष्टि का मुख्य कारण वर्षा है इसी वर्षा के अभाव से राज्य में अकाल पड़ गया है और अकाल से प्रजा मररहा है। हे राजन्! आप कोई ऐसा उपाय बताइये जिससे हम लोग का दुख दूर हो! इस पर राजा मान्धाता बोला-कि आप लोग ठीक कहरहे हैं। वर्षा से ही अन्न उत्पन्न होता है। वर्षा के न होने से आप लोग

बहुत दुखी है। राजा के पापों के कारण ही प्रजा को दुख भोगना पड़ता है। मैं बहुत सोच विचार रहा हूँ फिर भी मुझे अपना कोई दोष दिखलाई नहीं देरहा है। मैं आप लोगों के दुख को दूर करने के लिये बहुत यत्न कर रहा हूँ।

ऐसा कहकर राजा मान्धाता भगवान्‌की पूजा कर कुछ मुख्य आदमियों को साथ लेकर बन को चल दिया वहां वह ऋषियों के आश्रमों में घूमतेर अन्त में ब्रह्मा के पुत्र अङ्गिरा ऋषिके आश्रम पर पहुँचा ! उस स्थान पर राजा घोड़े से उतरा और आश्रम में आया। वहाँ मुनि अभी नित्य कर्मसे निवृत हुएही थे राजाने उनके सन्मुख प्रणाम किया और मुनि ने उसको आशीर्वाद दिया और राजा से बोले कि हे राजन ! आप कुशल पूर्वक हैं तथा आपकी प्रजा भी कुशल पूर्वक होगी। आप इस स्थान पर कैसे पधारे हैं सो कहिये राजा बोला कि हे महर्षि मेरे राज्य में तीन वर्ष से वर्षा नहीं हुई है इससे अकाल पड़ गया है और प्रजा महान दुःखी

है। राजा के पापों के प्रभाव से ही प्रजा को कष्ट मिलता है ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। मैं धर्मानुसार राज्य करता हूँ फिर यह अकाल कैसे पड़ गया है। इसके कारणका मुझे अभीतक पता न लग सका। अब मैं आपके पास इसी संदेस की निवृत्ति के लिये आया हूँ। आप कृपा कर मेरे इस संदेह को दूर कीजिये और प्रजा के कष्ट को दूर करने के लिये कोई उपाय बताइये। इस पर वह ऋषि बोला—राजन्! यह सत्युग सब युगों से श्रेष्ठ है इसमें धर्म के चारों चरण सम्मिलित हैं अर्थात् इस युग में धर्म की सबसे अधिक उन्नति है। इस युग में ब्राह्मणों का तपस्या करना तथा वेद पढ़ना हीं मुख्य अधिकार है। परन्तु आपके राज्य में एक शूद्र इस युग में भी तपस्या कर रहा है। इसी दोष के कारण आपके राज्य में वर्षा नहीं हो रही है। यदि आप प्रजा का भला चाहते हैं तो उस शूद्रको मार दीजिये। इस पर राजा बोले कि हे मुनीश्वर मैं उस निरअपराध तपस्या करने वाले शूद्रको नहीं

मार सकता। आप इस दोषसे छूटने का कोई अन्य उपाय बतलाइये। तब ऋषि बोला कि हे राजन्! यदि तुम ऐसा चाहते हो तो आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की पद्मा नाम की एकादशी का विधि पूर्वक व्रत करो। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे राज्य में वर्षा होगी और प्रजा सुख पावेगी क्योंकि इस एकादशी का व्रत सब सिद्धियों का देने वाला और उपद्रवों को शाँत करने वाला है। इस एकादशी का व्रत तुम, प्रजा तथा सेवक, मन्त्रियों आदि सहित करो। मुनि के इन बचनों को सुनकर राजा अपने नगर को वापिस आया। और विधि पूर्वक पद्मा एकादशी का व्रत किया। उस व्रत के प्रभावसे राज्य में वर्षा हुई और प्रजा को सुख पहुँचा।

इसलिये यह व्रत सबको करना चाहिये व्रत यह इस लोकमें भोग और परलोक में मुक्ति दोनों को देनेवाला है। इसकी कथा के पढ़ने व सुननेसे मनुष्यों के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

इस एकादशी को देव शयनी एकादशी भी कहते

हैं। इस व्रत के करने से विष्णु भगवान प्रसन्न होते हैं। अतः मोक्ष की इच्छा करने वाले मनुष्यों को इस एकादशीका व्रत अवश्यकरनाचाहिये। चातुर्मास व्रत भी इसी एकादशीके व्रतसे शुरू किया जाता है

युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन्! विष्णु भगवान का शयन व्रत किस प्रकार किया जाता है? सो अब कृपा पूर्वक कहिये श्रीकृष्ण बोले कि हे राजन्! अब मैं आपको विष्णु के शयन का व्रत कहता हूँ तथा चातुर्मास्य व्रत की भी कथा कहता हूँ अब आप ध्यान पूर्वक सुनिये।

जब सूर्यनारायण कर्क राशि में स्थित हों तब विष्णु भगवान को शयन कराना चाहिये और सूर्य नारायण के तुला राशि पर आने पर भगवान को उठाना चाहिये। लौंद [अधिक] माहके आने पर भी यह बिधि इसी प्रकार रहती है। इस बिधि से अन्य देवताओंको शयन न कराना चाहिये और न उठाना चाहिये। आषाढ़ माह की शुक्लपक्ष की एकादशी का बिधि पूर्वक व्रत करना चाहिये। उस

दिन विष्णुभगवान की प्रतिमा बनानी चाहिये और चातुर्मास्य व्रत का नियम करना चाहिये। सबसे प्रथम उस प्रतिमा को स्नान कराना चाहिये। फिर सफेद वस्त्रों को धारण करा कर तकियादार शैया पर शयन कराना चाहिये। उनको धूप दीप नैवेद्य आदि से पूजन कराना चाहिये। भगवान का पूजन शास्त्र ज्ञाता ब्राह्मणों के द्वारा कराना चाहिये। तत्पश्चात् भगवान विष्णु की इस प्रकार स्तुति करनी चाहिये।

हे भगवान! मैंने आपको शयन कराया है आपके शयन से सम्पूर्ण विश्व सो जाता है। इस तरह विष्णु भगवान के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना करनी चाहिये कि हे भगवान्! आप जबतक चार मास तक शयन करें तबतक मेरे इस चातुर्मास्य व्रत को निर्विघ्न रखें।

इस प्रकार विष्णु भगवान की स्तुति करके शुद्ध भावों से मनुष्य को दाँतुन आदि करना चाहिये विष्णु भगवान के व्रत को शुरू करने के पाँच काल

वर्णन किये हैं। देवशयनी एकादशी से लेकर देवोत्थानी एकादशी तक चातुर्मास्य व्रत को करना चाहिये। द्वादशी, पूर्णमासी, अष्टमी या संक्रांति को व्रत प्रारंभ करना चाहिये और कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को समाप्त कर देना चाहिये। इस व्रत से समस्त पाप नाश हो जाते हैं जो मनुष्य इस व्रत को प्रति वर्ष करते हैं वह सूर्य के समान देदीप्यमान विमान पर बैठ कर विष्णु लोक को जाते हैं हे राजन आप इसका अलग अलग फल सुनें।

जो आदमी देव मन्दिरों में रंगीन बेल बूंटे बनाता है उसे सात जन्म तक ब्राह्मण की योनि मिलती है। जो मनुष्य चातुर्मास्यके दिनोंमें विष्णु भगवानको दही, दूध, घी, शहद और मिश्रीके द्वारा स्नान कराता है वह वैभवशाली होकर सुख भोगता है। जो आदमी श्रद्धा पूर्वक भूमि, ,दक्षिणा आदि ब्राह्मणों को दान देता है वह स्वर्ग में जाकर इन्द्र के समान सुख भोगता है। जो विष्णुभगवान

की सोने की प्रतिमा बनाकर धूप, दीप, पुष्प, नैवेद्य आदि से भगवान की पूजा करता है वह इन्द्रलोक में जाकर अक्षय सुख भोगता है। जो मनुष्य चातुर्मास्यके अन्दर नित्यप्रति तुलसीजी भगवानको अर्पित करता है वह स्वर्ण के विमान पर बैठ कर विष्णुलोक को जाता है। जो मनुष्य विष्णु भगवन की धूप दीपसे पूजा करते हैं उनको अनन्त संपति मिलती है। जो मनुष्य इस एकादशी से कार्तिक महीने तक अश्वत्थ वृक्ष और विष्णु की पूजा करते हैं उनको विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। इस चातुर्मास्य व्रत में जो मनुष्य संध्या के समय देवताओं तथा ब्राह्मणों को दीप दान करते हैं वह विष्णुलोक को जाते हैं। जा मनुष्य भक्ति पूर्वक भगवान का चरणामृत लेते हैं वह इस संसार के आवागमन के चक्र से छूट जाते हैं। जो विष्णु मन्दिर में नित्य प्रति एक सौ आठ बार गायत्री मन्त्र का जप करते हैं वह पापों में लिप्त नहीं होते। जो मनुष्य पुराण तथा धर्म शास्त्रको सुनते

हैं और वेदपाठी ब्राह्मण को बस्त्रों तथा स्वर्ण सहित उसका दान करते हैं वे दानी, धनी, ज्ञानी और कीर्तिमान होते हैं। जो मनुष्य विष्णु भगवान् या शिवजी का स्मरण कर उनकी प्रतिमा दान करते हैं वह पापों से रहित होकर गुणवान बनते हैं। जो मनुष्य सूर्यनारायण को अर्घ्य देते हैं और समाप्ति में स्वर्ण रत्न, गौ-दान करते हैं उनको पूरी आयु की स्वस्थ देह प्राप्त होती हैं तथा कीर्ति धन और बल पाते हैं। चातुर्मास्य में जो मनुष्य गायत्री मन्त्र द्वारा तिल से होम करते हैं और चातुर्मास्य समाप्त हो जाने पर तिल का दान करते हैं उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और निरोग शरीर मिलता है तथा सुपात्र सन्तान होती है। मनुष्य चातुर्मास्य ब्रत में अन्न से होम करते तथा समाप्त हो जाने पर घी, घड़ा और वस्त्रों को दान करते हैं वह ऐश्वर्य शाली होते हैं। तथा ब्रह्मा के समान भोग भोगते हैं। अश्वत्थ वृक्ष की पूजा करते हैं तथा अन्त में स्वर्ण सहित वस्त्रों का दान करते हैं उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

जो मनुष्य तुलसी को धारण करते हैं तथा विष्णु भगवान के निमित्त ब्राह्मणों को दान करते हैं वह विष्णु लोक को जाते हैं। जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत में भगवान के शयन के उपरान्त उनके मस्तक पर नित्य-प्रति दूर्वा चढ़ाते हैं स्वर्ण की दूर्वा दान करते हैं तथा दान देते समय जो इस प्रकार स्तुति करते हैं कि हे दूर्वे! जिस भांति इस पृथ्वी पर शाखाओं और छोटी शाखाओं सहित फैली हुई हो उसी प्रकार मुझे भी अजर अमर सन्तान दो। ऐसा करने वाले मनुष्यों के सब पाप छूट जाते हैं और अन्त में स्वर्ग को जाते हैं। जो शिवजी या विष्णु भगवान के देवालय में गान करते हैं उन्हें रात्रि जागरण का फल मिलता है। जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत करते हैं उनको उत्तम ध्वनि वाला घन्टा दान करना चाहिये। तथा उसको भगवान की इस प्रकार स्तुति करनी चाहिये—हे भगवन्! हे जगत्पति! आप पापों का नाश करने वाले हैं। आप मेरे करने योग्य कार्यों को न

करने और न करने योग्य कार्यों को करने से जो पाप उत्पन्न हुए हैं उनको नष्ट कीजिये। चातुर्मास्य व्रत के अन्दर जो नित्य-प्रति ब्राह्मणों का चरणामृत पान करते हैं वे समस्त पापों दुखों से छूट जाते हैं और वे आयुवान लक्ष्मीवान होते हैं।

चातुर्मास्य व्रत के समाप्त हो जाने के बाद दो गौ-दान करना चाहिये। यदि गौ दान न कर सकें तो वस्त्रों का दान अवश्य करना चाहिये। जो ब्राह्मणों को नित्य प्रति नमस्कार करते हैं उनका जीवन सफल है और वे समस्त पापों से छूट जाते हैं चातुर्मास्य व्रत की समाप्ति में जो ब्राह्मणों को भोजन कराता है उसकी आयु तथा धन की वृद्धि होती है जो मनुष्य अलंकार दक्षिणा सहित बछड़े वाली कपिला गाय वेदपाठी ब्राह्मण को दान करते हैं वह चक्रवर्ती, आयुवान, पुत्रवान राजा होते हैं और स्वर्ग लोक में प्रलय के अन्त तक इन्द्र के के समान राज्य करते हैं। जो मनुष्य सूर्य भगवान तथा गणेशजी को नित्य नमस्कार करते हैं उनकी

आयु तथा लक्ष्मी बढ़ती है और यदि गणेश
प्रशन्न हो जांय तो मनबाँछित फल पाते हैं गणेश
और सूर्य की प्रतिमा ब्राह्मण को देने से सब क
की सिद्ध होती है। जो मनुष्य दोनों ऋतुओं
महादेव की प्रसन्नता के लिये रूपा दान करते
या जोप्रतिदिन तिल और वस्त्रों के साथ ता
का पात्र दान करते हैं उनके यहाँ स्वस्थ, सुन्द
शिव भक्त पुत्र रत्न उत्पन्न होता है।

चातुर्मास व्रत की समाप्तिपर चांदी या तां
पात्र गुड़ और तिल के साथ दान कर
चाहिये। जो मनुष्य विष्णु भगवान के शयन क
के उपरान्त यथा शक्ति वस्त्र और तिल के सा
सोना दान करते हैं उनके समस्त पाप नष्ट होजा
हैं और इस लोक में भोग तथा परलोक में मो
मिलती है। जो मनुष्य ब्राह्मणों की धूप पुष्प
पूजा करते हैं और अन्न और वस्त्र का दा
देते हैं तथा चातुर्मास्य व्रत के समाप्त होने
शय्या दान करते हैं उसको अक्षय सुख मिलता

और कुबेर के समान धनवान होते हैं। वर्षा ऋतु में जो गोपीचन्दन देते हैं उस पर भगवान प्रसन्न होते हैं और इस लोक में भोग तथा परलोक में मुक्ति पाते हैं। चातुर्मास्य व्रतजोभगवानकेदानदेते शयन करने पर गुड़ अथवा शक्कर का दान देते हैं उनको व्रत के समाप्त होजाने पर इस प्रकार उद्यापन करना चाहिये। चार पल या आठ पल या अड़तालीस पल का एक तांबे का पात्र लेकर उसमें शक्कर भरकर तथा वस्त्र,फल दक्षिणा सहित ब्राह्मणको देना चाहिये। शक्कर सहित तांबे का पात्र सूर्य को प्रिय है। इससे मनुष्य के समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं। इसके दान के प्रभाव से बलवान् कीर्तिवान् सन्तान उत्पन्न होती है।

हे कुन्ती पुत्र! इस चातुर्मास्य व्रत को करने वाला मनुष्य गन्धर्व विद्या में निपुण और स्त्रियों को प्रिय होता है जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत में ब्राह्मणों को शाक, फल आदि दान देते हैं वह सुखी राज योगीबनते है। शाकऔरफलदेवताओंकोतथामनुष्यों

कोप्रिय है अतः उसके देनेसे देवता प्रसन्न होते हैं। जो मनुष्य इस व्रत में प्रति दिन सोंठ, मिर्च, पीपल वस्त्र दान करते हैं और व्रत के अन्त में स्वर्ण की सोंठ, मिर्च आदि दान देते हैं वे सौ वर्ष तक जीते हैं। जो मनुष्य बुद्धिमान ब्राह्मण को मोती का दान करता है वह कीर्ति को प्राप्त करता है। जो मनुष्य इस व्रत में तंबाकू का दान करते हैं और लाल वस्त्र ब्राह्मण को दान करते हैं वह अगले जन्म में सौन्दर्यशाली बनते हैं और निरोगी बुद्धिमान भाग्यवान् तथा सुन्दर वाणी वाले होते हैं तंबाकू के दान से इस लोकमें गन्धर्व विद्या में निपुण और परलोक में स्वर्ग मिलता है। तम्बाकू लक्ष्मी और मंगल प्रदान करती है इसके दानसे देवता प्रसन्न होते हैं। इस व्रत में जो मनुष्य लक्ष्मी या पार्वती की प्रसन्नता के लिये हल्दी का दान करते हैं और अन्त में चाँदी के पात्र में हल्दी रखकर दान करते हैं वे स्त्रियाँ अपने पति के साथ और पति अपनी स्त्री

के साथ सुख भोगते हैं। इससे उन्हें सौभाग्य अक्षय धन तथा सुपात्र सन्तान मिलती हैं और उनकी देवलोक में पूजा होती है इस व्रत में जो मनुष्य शिवजी और पार्वती जी की प्रसन्नता के लिये ब्राह्मण स्त्री पुरुषोंकी पूजा करते हैं तथा दक्षिणा वस्त्र स्वर्ण आदि दान करते हैं और व्रतके शुरूमें शिवजी की सोने की प्रतिमा दान देते हैं। गौ और बैल दान करते हैं और ब्राह्मणों को मीठा भोजन कराते हैं उन्हें सम्पत्ति और कीर्ति मिलती है और इस लोकमें सुख भोगकर अन्त में शिवलोक को जाते हैं। जो मनुष्य फल का दान करते हैं उनके समस्त मनोरथ सिद्ध होजाते हैं सुपात्र संतान उत्पन्न होती है फल दान से उनको नंदन बन का सुख प्राप्त होता है जो मनुष्य इस व्रतमें पुष्प दान करते हैं उनको इस लोक में सुख और परलोक में गंधर्व पद मिलता है इसमें बावन भगवानकी प्रसन्नता के लिये ब्राह्मणों को दही से युक्त भात

खिलाना चाहिये। यदि यह नित्य न हो सके तो आठें, अमावस्या, पूर्णमासी और प्रत्येक रविवार या शुक्रवारको खिलाना चाहिये। इसव्रतकी समाप्तिमें भूमिका दानकरनाचाहिये। यदिभूमिदान न हो सके तो वस्त्र और स्वर्णसे युक्त पादुका दान करनाचाहिये। ऐसा करने से इस लोक में धन-धान्य, पुत्र तथा विष्णु भक्ति मिलती है और अन्त में विष्णु लोक को जाते हैं। जो मनुष्य आभूषण से युक्त बछड़ा सहित गौ का दान करते हैं वह इस लोक में ज्ञानी होते हैं और किसी के सेवक नहीं बनते और अन्त में ब्रह्मलोक में जाकर पितरों के साथ अनंत सुख प्राप्त करते हैं।

चातुर्मास्य व्रत में जो मनुष्य प्रजापत्य व्रत करते हैं इसके समाप्तमें गौ दान करते तथा ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं वह समस्त पापों से छूट कर ब्रह्मलोक को जाते हैं। इस व्रत में जो एक दिन छोड़कर वस्त्र और बैलों के साथ आठ हल दान करते हैं और शाक, मूल फल आहार करते हैं

वह विष्णुलोक को जाते हैं। जो मनुष्य पयोव्रत करते हैं और अन्त में दूध वाली गौदानदेते हैं वह विष्णुलोक को जाते हैं। जो मनुष्य दोनों ऋतुओं में केला और पलास के पत्तों में भोजन करते हैं तथा कांसे का पात्र और वस्त्र दान करते हैं वेइस लोक में सुख पाते है। इस व्रत में जो पलास पत्र पर भोजन करते तथा तेल नहीं खाते उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं चातुर्मास्य व्रत के प्रभाव से ब्राह्मण घात करने वाला, सुरा पीने वाला, बालकों को मारने वाले, असत्य भाषण करने वाला, स्त्री को मारने वाला, किसी के व्रत को विगाड़ने वाला, अगम्या गमन करने वाला, ब्राह्मणी तथा चाण्डाल नी से गमन करने वाला इन सबके पाप नष्ट हो जाते हैं।

चातुर्मास्य व्रत के अन्त में चौंसठ पल का कांसे का पात्र तथा बछड़ा सहित गौ का दान करना चाहिये। जो मनुष्य भूमि को लीप कर भगवानकास्मरण करके भोजन करते हैं इन्हें आरो-

ग्यता तथा पुत्र की प्राप्ति होती है। वह धार्मिक तथा चक्रवर्ती राजा होते हैं। उन्हें किसी भी शत्रु का भय नहीं रहता जो मनुष्य बिना मांगे हुए आभूषणों से युक्त चंदन सहित बैलका दान करते हैं तथा उसे षटरस युक्त भोजन कराते हैं उन्हें विष्णुलोक प्राप्तहोता हैं। जो मनुष्य भगवान के शयन करने पर नित्यप्रति रात्रिका जागरण करते हैं तथा अन्त में ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं उन्हें शिवलोक की प्राप्ति होती है। चातुर्मास्य व्रत में जो मनुष्य नित्य-प्रति एक समय खाकर ही रहते हैं तथा अन्त में भूखे को भोजक कराते हैं उन्हे स्वर्ग की प्राप्ति होतीं है। जो भगवान के शयन करने के बाद भूमि पर सोते हैं तथा अन्त में शय्या दान करते हैं उनकी शिव लोक में पूजा होती है। चातुर्मास्य,व्रतमें जो मनुष्य मैथुन नहीं करता वह बलशाली, यशस्वी और लक्ष्मीवान् होता है। जो मनुष्य इस व्रत में उत्तम चावल या जौ का सपरिवार खाता है वह स्वर्ग को जाता है। चा

मास्य व्रत में जो तेल नहीं लगाता तथा अन्त में कांसे या मिट्टी के पात्र में तेल भरकर दान देता है वह बिष्णुलोक को जाता है। जो इस व्रतमेंशाक नहीं खाता और अन्त में चाँदी के पात्र को वस्त्रसे लपेटकर तथा दशप्रकार के शाकों से युक्त वेदपाठी ब्राह्मण को देता है वह शिवलोक में जाता है। जो मनुष्य इस व्रत में गेहूँ को त्याग कर भोजन करते हैं तथा स्वर्ण का गेहूँ का दान करते हैं उन्हें अश्वमेध यज्ञ के फल की प्राप्ति होती हैं। जो मनुष्य इस व्रत में इन्द्रियों का दमन करता है उसे अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। जो मनुष्य श्रावण में शाक भादों में दही, क्वार में दूध और कार्तिकमें दालको त्याग देते हैं उन्हें निरोगीकाया प्राप्त होती हैं। जो मनुष्य इस व्रतमें मीठा, खट्टा कड़ुआ पदार्थ को त्याग देता है वह समस्त दुर्गुणों से छूटकर स्वर्ग को जाता है। जो मनुष्य इस व्रत में पुष्प आदि का धारण करना छोड़ देते हैं तथाजो मनुष्य चाँन्द्रायण व्रतकरते है वह स्वर्गलोक

को जाते हैं जो मनुष्य इस व्रत में एक मास दूध पर ही जीवन निर्वाह करते हैं उनका वंश प्रलय के अन्त तक चलता है जिस दिन भगवान शयन से उठते हैं उस दिन ब्राह्मणों को दान वस्त्र तथा भोजन कराना चाहिये। चोरी करने वाला, मद्यपान करने वाला, अधर्मी, शास्त्रों का निरादर करने वाला, मिथ्या बोलने वाला तथा अन्य त्याज्य कर्म करने वाले ब्राह्मण को दान देने से उल्टा पाप लगता है तथा नर्क की प्राप्ति होती है।

श्रावण कृ० ११

अथ कामिका एकादशी माहात्म्य

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन्! मैंने आषाढ़ माह के शुक्लपक्ष की देवशयनी एकादशी का सविस्तार वर्णन सुना अब आप मुझे श्रावण माह के कृष्णपक्ष की एकादशी का सविस्तार वर्णन सुनाइये। इस एकादशी का नाम क्या है तथा इसकी विधि क्या है। इनमें कौन से देवता की पूजा होती है।

श्रीकृष्ण भगवान बोले कि हे राजन! मैं इस

एकादशी की कथाकहता हूँ। एक समय इस एकादशी की पावन कथा को भीष्म पितामह ने नारद जी से कहा था। एक समय नारदजी ने पूछा कि हे पितामह! आज मेरी श्रावण माह के कृष्णपक्ष की एकादशी की कथा सुनने की इच्छा है। अतः अब आप एकादशी की व्रत कथा विधि सहित सुनाइये। भीष्म पितामह नारदजी के वचनों को सुनकर बोले हे नारदजी! आपनेमुझसे यह अत्यन्त सुन्दर प्रश्न किया है। अब आप ध्यान लगा कर सुनिये।

श्रावण माह के कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम कामिका है। इस एकादशी की कथा के सुनने से बाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। कामिका एकादशी के व्रत में शंख, चक्र, गदाधारी विष्णु भगवान की पूजा की जाती है। जो आदमी इस एकादशी को धूप, दीप, नैवेद्य आदि से भगवान विष्णु की पूजा करते हैं। उनको गंगा स्नान के फल से भी बड़ा फल मिलता है।

सूर्य चन्द्र ग्रहण में केदार और कुरुक्षेत्र में नहाने से जो फल मिलता है वह फल विष्णु भगवान की भक्ति पूर्वक पूजा करने से मिल जाता है। श्री विष्णु भगवान के पूजन का फल समुद्र और वन सहित पृथ्वी दान करने और सिंह राशि वालों को गोदावरी नदी में स्नान करने के फलसे भी अधिक होता है। व्यातीपात में गण्डकी नदी में स्नान करने से जो फल मिलता है वह फल भगवान् की पूजा करने से मिल जाता है। संसार में भगवानकी पूजा करने का फल सबसे अधिक है। भगवानकी पूजाका फल श्रावण माह के कृष्णपक्ष की एकादशी के फल के बराबर है। अतः भक्ति पूर्वक भगवान की पूजा न बन सके तो श्रावण माह के कृष्णपक्ष की कामिका एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिये।

जो उत्तम द्विज श्रावण माह के कृष्णपक्षकी कामिका एकादशी का व्रत करते हैं तथा श्री विष्णु भगवान को पूजा करते हैं उससे समस्त देव,

नाग, किन्नर पितर आदि की पूजा हो जाती है इसलिये पापों से डरने वाले व्यक्तियों को विधि सहित इस व्रत को करना चाहिये।

संसार सागर तथा पापों में फंसे हुये जीवों को इनसे छूटने के लिये कामिका एकादशी का व्रत करना चाहिये। संसार में इससे अधिक पापों को नष्ट करने वाला और कोई उपाय नहीं है। नारदजी से स्वयं भगवान ने अपने मुख से कहा है कि मनुष्यों को अध्यात्म्य विद्या से जो सुख मिलता है उससे अधिक फल कामिका एकादशी का व्रत करने से मिल जाता है। इस व्रत के करने से जीव अन्तिम समय अनेक दुःखों से युक्त यमराज तथा नरक के दर्शन नहीं करता। कामिका एकादशी के व्रत तथा रात्रि के जागरण से मनुष्य को कुयोनि नहीं मिलती।

जो उत्तम द्विजश्रावण मासके कृष्णपक्षकी कामिका एकादशी को तुलसी से भक्ति पूर्वक श्री विष्णु भगवान की पूजा करते हैं वे इस संसार सागर में

रहते हुये भी इस प्रकार अलग रहते हैं जिस प्रकार कमल जल में रहता हुआ भी जलसे अलग रहता है। भगवान की तुलसी दल से पूजा करने का फल एक भार स्वर्ण और चार भार चाँदी के दान के फल के बराबर है। श्री विष्णु भगवान रत्न, मोती, मणि, आभूषण आदि की अपेक्षा तुलसीदल से अधिक प्रसन्न होते हैं। भगवान् तुलसीदल से पूजा करने से प्रसन्न होते हैं।

हे नारदजी ! मैं स्वयम् भगवान् की अत्यन्त प्रिय श्री तुलसीजी को नमस्कार करता हूँ। तुलसी जी के दर्शन मात्र से मनुष्य के समस्त पाप नष्टहो जाते हैं और शरीर के स्पर्श से मनुष्य पवित्र हो जाता है। तुलसीजी को जल से स्नान कराने से मनुष्य की समस्त यमयातनायें नष्ट हो जाती है। जो तुलसी जी को भक्तिपूर्वक भगवानके चरणों में अर्पित करता है उन्हें मुक्ति मिलती है। जो प्राणी इस कामिका एकादशी को रात्रि जागरण और दीपदान करते हैं

उसके फल को लिखने में चित्रगुप्त भी असमर्थ है जो मनुष्य एकादशी के दिन भगवान के सामने दीप जलाते हैं उनके पितृ स्वर्ग लोक में सुधा पान करते हैं। जो मनुष्य भगवान् के सामने घी या तिल के तेल का दीपक जलाते हैं उनको सूर्यलोक मिलता है। प्रत्येक मनुष्य को इस एकादशी के व्रत को अवश्य करना चाहिये। इस व्रत के करने से ब्रह्म हत्या ब्राह्मण हत्या आदि के पाप नष्ट हो जाते हैं और इस लोक में सुख भोगकर अन्त में विष्णुलोक को जाते हैं।

अथ पुत्रदा एकादशी माहात्म्य

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन्! अब मुझे श्रावण माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी की कथा सुनाइये। इस एकादशी का नाम क्या है। तथा इसकी विधि क्या है! श्रीमधुसूदन बोले कि राजन्! अब आप शन्ति पूर्वक श्रावण माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी की कथा सुनिये।

द्वापुर युग के प्रारम्भ में महिष्मयी नाम की नगरी थी। उस नगरी में महीजित नाम का एक राजा राज्य करता था। वह राजा पुत्रहीन था। क्योंकि पुत्र के विना इस लोक और परलोक दोनों में सुख नहीं है। राजा ने पुत्र की प्राप्ति के बहुत यत्न किये परन्तु वह निष्फल गये। जब वह राजा बृद्ध होने लगा तो उसकी चिन्ता भी बढ़ने लगी एक दिन उस राजा ने प्रजा को सम्बोधन करके कहा कि न तो मैंने अपने जीवन में पाप ही किया है और न अन्याय पूर्वक प्रजा से धन ही एकत्रित किया है। न मैंने कभी देवता और ब्राह्मणों का धन छीना है मैंने प्रजा को सदैव पुत्र की तरह पाला है। मैंने अपराधियों को पुत्र और बाँधवों की तरह दण्ड दिये हैं। मैंने कभी किसी से राग द्वेष नही किया सबको समान माना है। इस प्रकार धर्म युक्त राज्य करने पर भी मैं इस समय महान् दुःख पा रहा हूँ सो क्या कारण है।

राजा महीजित की इस बात को बिचारने के

लिये मन्त्री आदि बन को गये। वहां जाकर उन्होंने बड़े बड़े ऋषि मुनियों के दर्शन किये उस स्थान पर वयो वृद्ध और धर्म के ज्ञाता महर्षि लोमश के पास गये। उन सबने जाकर उन महर्षि को यथा योग प्रणाम किया। उनके दर्शनसे सबको बड़ी प्रसन्नता हुई और उनसे विनय करने लगे कि हे देव! हमारे अहो भाग्य हैं कि हमने आपके दर्शन करे! इस पर लोमश ऋषि बोले कि हे ब्राह्मणों! आप लोगों की विनय और आपके सद् व्यवहार से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ। अब आप मुझे अपने आने का कारण बतलाइये। मैं आपके कार्य को अपनी शक्ति अनुसार अवश्य ही करूंगा क्योंकि हमारा शरीर ही परोपकार के लिये बना है। इसमें किंचित् मात्र भी संदेह नहीं है। लोमश ऋषि के ऐसे बचन सुनकर सब लोग बोले कि हे महर्षि! आप हमारी समस्त बातों को जानने में ब्रह्मा से अधिक हैं। अतः आप हमारे संदेह को दूर कीजिये। महिष्मती नाम

की पुरी में एक महीजित नाम का एक धर्मात्मा राजा है। वह प्रजा को पुत्र की तरह धर्मानुसार पालन करता है परन्तु फिर भी वह पुत्र हीन है! इससे वह अत्यन्त दुःखी रहता है। हम लोग उस राजा की प्रजा भी हैं। हम भी उसके दुःखसे दुःखी हो रहे हैं। क्योंकि प्रजा का कर्त्तव्य है कि राजा के सुख में सुख माने और उसके दुःख में दुःख माने। हमको उसके पुत्र हीन होने का अभी तक कारण प्रतीत नहीं हुआ। इसी से अब तय करने आते हैं। अब जबसे हमने आपके दर्शन करे हैं हमको पूर्ण रूप से बिश्वास है कि हमारा कष्ट अब अवश्य ही दूर हो जायगा। अतः अब आप हमको राजा के पुत्र होने का उपाय बतलाइये।

इस पर लोमष ऋषि ने एक क्षण के लिये नेत्र बन्द किये और राजा के पूर्व जन्मों का विचार करने लगे। विचार करके बोले कि हे ब्राह्मणों यह राजा पिछले जन्म में अत्यन्त निर्धन था तथा बुरे कर्म किया करता था। वह एक गाँव से दूसरे गांव

को घूमा करता था। एक दिन ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन जो कि दो दिन से भूखा था दुपहरके समय एक जलाशय पर जल पीने गया। उस स्थान पर एक उसी समय की ब्याही हुई प्यासी गाय जल पी रही थी। राजा ने उसको प्यासी ही हटा दिया और स्वयं जल पीने लगा। हे ब्राह्मणों! इसीलिये राजा को यह दुःख भोगने पड़ रहे हैं। एकादशी के दिन भूखा रहने से उसको राजा होना पड़ा और प्यासी गौ को हटाने से पुत्र बियोग का दुःख भोगना पड़ा।

इस पर सब लोग बोले कि हे महर्षि! शास्त्रों में ऐसा लिखा है कि पुण्य से पाप नष्ट हो जाते हैं। इसलिये कृपा करके आप राजा के पूर्व जन्म के पाप नष्ट होने का उपाय बतलाइये क्योंकि उस पाप के क्षय होने से पुत्र रत्नकी प्राप्ति होगी ब्राह्मणों के ऐसे बचनों को सुनकर लोमष ऋषि बोले कि हे ब्राह्मणों। यदि श्रावण माह की शुक्लपक्ष की पुत्रदा एकादशी को तुम सब लोग व्रत करो और रात्रि

को जागरण करो और उस व्रत के फल को राजा को प्रदान कर दो तो तुम्हारे राजा के पुत्र रत्न पैदा होगा। इससे तुम सब लोगों तथा राजा के समस्त दुःख दूर हो जायेंगे।

मन्त्रियों सहित समस्त प्रजा महर्षि लोमश ऋषि के वाक्यों को सुनकर प्रसन्नता पूर्वक अपने नगर को वापिस आई। उन सब लोगों ने श्रावण माह के शुक्ल पक्ष की पुत्रदा एकादशी का बिधि पूर्वक व्रत किया और द्वादशी को उस फलको राजा को दे दिया। उस पुण्य के प्रभाव से रानी ने गर्भ को धारण किया और नौ महीने के पश्चात उसके एक अत्यन्त तेजस्वी पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ।

हे राजन! इसलिये इस एकादशी का नाम पुत्रदा पड़ा। जो मनुष्य पुत्र रत्न को प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें इस एकादशी का विधि पूर्वक व्रत करना चाहिये।

हे राजन् ! इसलिये इस एकादशी का नाम पुत्रदा पड़ा । जो मनुष्य पुत्र प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें इस एकादशी का सविधिव्रत करना चाहिये।

भादों कृ० ११

अथ अजा एकादशी माहात्म्य

कुन्ती पुत्र युधिष्ठर बोले कि हे जनार्दन ! अब आप मुझे भादों की कृष्णपक्ष की एकादशी के बारे में बतलाइये । उस एकादशी का क्या नाम है तथा उसकी विधि क्या है ?

श्रीकृष्ण भगवान् बोले कि हे राजर्षि! भादों की कृष्णपक्ष की एकादशी को अजा कहते हैं। इसके व्रत करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य इस दिन भगवान की भक्तिपूर्वक पूजा करते हैं उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं इस लोक और परलोक में सहाय करने वाली इस एकादशी व्रत के समान विश्व में दूसरी एकादशी नहीं है इस एकादशी की कथा इस प्रकार है।

प्राचीन काल में एक चक्रवर्ती राजा राज्य करता था उसका नाम हरिश्चन्द्र था। वह अत्यन्त वीर प्रतापी तथा सत्यवादी था। उसने किसी अज्ञातकर्म तथा प्रतिज्ञा करके राज्य को त्याग दिया और अपनी स्त्री पुत्र को बेच डाला। वह स्वयं एक चांडाल का सेवक बन गया था। उसने उस चांडाल के यहां कफन लेने का काम किया। परन्तु उसने इस आपत्ति में भी सत्य को न छोड़ा। जब इस प्रकार रहते हुये उसको बहुत बर्ष हो गये तो उसे अपने इस नीच कर्म पर बड़ा दुःख हुआ और वह इससे मुक्त होने का उपाय खोजने लगा। वह उस जगह सदैव इसी चिंता में लगा रहता कि मैं क्या करूं।

एक समय जब कि वह चिंता कर रहा था गौतम ऋषि आये। राजा ने उन्हें प्रणाम किया। और अपनी दुःख की कथा सुनाने लगे। महर्षि गौतम राजा के दुःखों को सुनकर अत्यन्त दुखी हुए और राजा से बोले कि हे राजन्! भादों के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम अजा है। तुम

उसी एकादशीका विधि पूर्वक व्रत करो तथा रात्रि को जागरण करो इससे तुम्हारे समस्त पाप नष्ट हो जावेंगे ।

अजा एकादशी आने पर राजा ने मुनि के कहे अनुसार विधि पूर्वक व्रत तथा रात्रि जागरण किया । उसी व्रत के प्रभाव से राजा के समस्त पाप नष्ट होगये । उस समय स्वर्ग में नगाड़े बजने लगे तथा पुष्पों की वर्षा होने लगी । उसने अपने सामने ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, महादेवजी आदि देवता ओं को खड़ा पाया । उसने अपने मृतक पुत्र को जीवित तथा स्त्री को वस्त्र तथा आभूषणों से युक्त देखा । उस व्रत के प्रभाव से उसको पुनः राज्य मिला और अन्त समय अपने परिवार सहित स्वर्ग लोक को गया ।

हे राजन् ! यह सब अजा एकादशी के व्रत का प्रभाव था । जो मनुष्य इस व्रत को विधि पूर्वक करते हैं तथा रात्रि जागरण करते हैं उनके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त समय में

स्वर्ग लोक को जाते हैं इस एकादशी की कथा के श्रवण मात्रसे ही अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है

भादो शुक्ल

—:❀:—

अथ वावन (परिवर्तिनी) एकादशी माहात्म्य

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन् ! भादों की शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है। तथा उसकी विधि क्या है। उस एकादशी के व्रत को करने से कौनसा फल मिलता है। सो सब कहिये।

भगवान बोले हे राजन् ! अब मैं भादों की शुक्ल पक्ष की वावन नाम की एकादशी की कथा कहता हूँ इसे ध्यान पूर्वक सुनो। इस एकादशी को जयन्ती एकादशी भी कहते हैं। इस एकादशी की कथा के सुनने से समस्त पापों का नाश हो जाता है। इस एकादशी के व्रत का फल वाजपेय यज्ञ के फल से भी अधिक है। इस जयन्ती एका दशी की कथा से नीच पापियों का उद्धार हो जाता है। हे महाभाग ! जो मनुष्य अपनी गति चाहते

हैं। उन्हें इस एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिये। यदि कोई मनुष्य एकादशी के दिन मेरी पूजा करता है तो मैं उसको संसार की पूजा का फल देता हूँ। जो मनुष्य मेरी पूजा करता है उसे मेरे लोक की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य इस एकादशी के दिन श्री वावन भगवान् की पूजा करता है। वह ब्रह्मा विष्णु महेश की पूजा करता है।

इस एकादशी के दिन श्री विष्णु भगवान करवट बदलते हैं इसलिये इसे परिबर्तिनी एकादशी भी कहते हैं इस पर श्रीयुधिष्ठिर बोले कि हे भगवन् आपके वचनों को सुनकर मुझे सन्देह हो रहा है कि आप किस प्रकार सोते तथा करवट बदलते हैं आपने वलि को क्यों बांधा और वावन रूप धारण करके क्यों लीलायें की! चातुर्मास्य व्रत की विधि क्या है तथा आपके शयन करने पर मनुष्य का क्या कर्तव्य है सो सब विस्तार पूर्वक कहिये।

श्रीकृष्ण बोले कि राजन्! अब आप पापों को नष्ट करने वाली कथा का श्रवण करो। त्रेतायुग में बलि नाम का एक दानव था वह अत्यन्त भक्त

दानी, सत्यवादी तथा ब्राह्मणों की सेवा करने वाला था। वह सदैव यज्ञ तप आदि किया करता था। वहअपनी भक्ति के प्रभाव से स्वर्ग में इन्द्र के स्थान पर राज्य करने लगा। इन्द्र तथा अन्य देवता भगवान के पास जाकर प्रार्थना करने लगे। अन्त में भगवान ने वावन का रूप धारण किया। मैंने अन्यन्त तेजस्वी ब्राह्मण बालक के रूप में राजा बलि को जीता।

युधिष्ठिर बोले कि जनार्दन! आपने वावन रूप धारण करके बलि को किस प्रकार जीता सो सब समझाइये भगवान बोले कि हे राजम मैंने वामन का रूप धारण करके राजा बलि से याचना की कि हे राजन्! तुम मुझे तीन पग भूमि दे दो इससे तुम्हारे लिये तीन लोक दान का फल प्राप्त होगा। राजा बलि ने इस छोटी सी याचना को स्वीकार कर लिया और भूमि देने को तैयार होगया। तब मैंने अपने आकार को बढ़ाया और भूलोक में पैर भुवरलोक में जंघा स्वर्ग लोक में

कमर महलोक में पेट, जन लोक में हृदय, तप लोक में कण्ठ और सत्यलोक में मुख को रखकर अपने शिर को ऊंचा उठा लिया। उस समय सूर्य चन्द्र नक्षत्र, इन्द्र तथा अन्य देवता आदि शास्त्रानुसार मेरीं स्तुति करने लगे। उस समय मैंने राजा बलि को पकड़ा और पूछा कि हे राजन् अब मैं तीसरा पैर कहां रक्खूं। इतना सुनकर राजा बलि ने अपना शिर नीचा कर लिया। उस शिर पर मैंने अपना तीसरा पैर रखदिया और वह भक्त दानव पाताल को चला गया। जब मैंने उसे अत्यन्त विनीत पाया तो मैंने उससे कहा कि हे बलि ? मैं सदैव तुम्हारे पास ही रहूँगा। भादों के शुक्लपक्ष की परिवर्तिनी नामक एकादशी के दिन मेरी एक प्रतिमा राजा बलि के पास रहती है और एक क्षीर सागर में शेषनाग पर शयन करती रहती है। इस एकादशी को विष्णु भगवान सोते हुए करवट बदलते हैं। इस दिन श्रीविष्णु भगवानकी पूजा की जाती है। इसमें चावल और दही सहित

रूपा का दान किया जाता है। इस दिन रात्रिको जागरण करना चाहिये। इस प्रकार व्रत करने से मनुष्य स्वर्ग लोक को जाता है उनको लोक तथा परलोक दोनों में यश मिलता हैं।

आश्विन कृष्ण

॥ अथ इन्दिरा एकादशी माहात्म्य ॥

श्रीयुधिष्ठर बोले कि हे भगवन्! अब आप आश्विन मास की कृष्णपक्ष की एकादशी की कथा कहिये। इस एकादशी का नाम क्या है तथा इस एकादशी के व्रत करने से कौन कौन फल मिलते हैं। इस पर श्रीकृष्ण भगवान बोले कि हे राजश्रेष्ठ! आश्विन मास की कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम इन्दिरा है। यह बहुत उत्तम है। इस एकादशी के व्रत करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इस व्रत के करने से नरक में गये हुये पितरों का उद्धार हो जाता है। इस कथासे बाजपेय यज्ञका फल मिलता है।

सतयुग में महिष्मती नामकी नगरीमें इन्द्रसेन नामका प्रतापी राजा राज्य करता था। वह पुत्र,

पौत्र, धन धान्य आदि से पूर्ण था एक समय जब राजा अपनी राज सभा में सुख पूर्वक बैठा था महर्षि नारद आकाश मार्ग से उतर कर वहाँ आये। मुनि को देख कर राजा आसन से उठा और अर्घ्य आदि से उनकी पूजा करके आसन दिया। महर्षि नारद बोले कि हे राजन्! आपके राज्य में सब कुशल हैं। मैं आपकी धर्मपरायणता देखकर अति प्रसन्न हूँ। तब राजा बोला हे महर्षि आपकी कृपा से मेरे राज्य में सब कुशल पूर्वक हैं तथा आपकी कृपा से मेरे समस्त यज्ञ आदि सफल हो गये हैं। तब नारद जी बोले कि हे राजन्! मुझे एक महान आश्चर्य हो रहा है कि एक समय जब मैं यमलोक को गया था तो उस समय यमराज की सभा में मैंने तुम्हारे पिता को बैठा हुआ देखा था। तुम्हारा पिता महान् ज्ञानी, दानी तथा धर्मात्मा था वह एकादशी के व्रत के बिगड़ जाने से यमलोक को गया है तुम्हारे पिता ने मुझसे तुम्हारे लिये एक समाचार

भेजा है कि आप मेरे पुत्र के पास जांय मेरे पुत्र का नाम इन्द्रसेन है जो कि महिष्मति नाम की नगरी में राज्य करता है। मुझे किसी पूर्व जन्म के बुरे कर्म के कारण यह लोक मिला है यदि मेरा पुत्र इन्द्रसेन आश्विन मास की इन्दरा एकादशी का व्रत करे और उस व्रत को मुझे देदे तो मेरी मुक्ति हो जाय इस लोक से छूट कर स्वर्ग में वास करूं।

जब राजा ने महर्षि नारद के दुःखपूर्ण वाक्यों को सुना तो उसे महान् दुख हुआ और इन्दरा एकादशी के व्रत की विधि पूछने लगा। इस पर नारदजी बोले कि हे राजन्! आश्विन मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी के दिन प्रातःकाल श्रद्धा सहित स्नान करना चाहिये। इसके पश्चात फिर दोपहर को भी स्नान करना चाहिये। उस समय जल से निकलकर श्रद्धा सहित पितरों का श्राद्ध करे और उस दिन एक समय भोजन करे और रात्रि को पृथ्वी पर शयन करे। इसके दूसरे दिन

प्रातःकाल दातुन करे और स्नान करे। उसकेपश्चात भक्ति पूर्वक व्रत को धारण करे और कहना चाहिये कि मैं आज निराहार रहूँगा और समस्त भोगों को त्याग दूंगा। इसके पश्चात कल भोजन करूंगा हे भगवन ! आप मेरी रक्षा करने वाले हैं। आप मेरे व्रत को निभाइये। इस प्रकार आचरण करके दोपहर को सालिगरामजी की मूर्ति को स्थापित करे और ब्राह्मण को बुलाकर भोजन करावे और दक्षिणा दे। भोजन में से कुछ हिस्से को गौ को दे और विष्णु भगवान की धूप दीप नैवेद्य आदिसे पूजा करे और रात्रि को जागरण करे। इसके उपरान्त द्वादशी के दिन मौन होकर बन्धु बांधवों सहित भोजन करे ! हे राजन् ! यह इन्दिरा एकादशी के व्रत की विधि है।

राजन् ! यदि तुम इस एकादशी के व्रत को करोगे तो तुम्हारे पिताजी अवश्य ही स्वर्ग को जावेंगे। महर्षि नारद राजा को यह उपदेश देकर अन्तर्ध्यान होगये। राजा ने इन्दिरा एकादशी के

आने पर उसका विधि पूर्वक व्रत किया। बन्धु बाँधव सहित इस व्रत के करने से आकाशसे पुष्पों की वर्षा हुई और राजा का पिता यमलोक से गरुड़ पर चढ़ कर स्वर्ग को गया। राजा इन्द्रसेन भी इस एकादशी के व्रत के प्रभाव से इस लोक में सुख भोगकर अन्त में स्वर्ग लोक को गया।

श्रीकृष्ण भगवान् कहने लगे कि हे धर्मराज युधिष्ठिर! यह मैंने तुम्हारे सामने इन्दिरा एकादशी का माहात्म्य वर्णन किया। इस कथा के पढ़ने व सुनने मात्र से ही समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। और अन्त में स्वर्ग लोक में जाकर वास करता है।

॥ अथ पाशांकुशा एकादशी माहात्म्य ॥

श्रीयुधिष्ठिर बोले कि हे भगवन्! आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम क्या है तथा उस व्रत के करने से कौन-कौन से फल मिलते हैं सो सब कहिये। इस पर श्रीकृष्ण भगवान् बोले कि हे राजन्! आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की एकादशीका नाम पाशांकुशा है। इसके व्रत करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

इस एकादशी के दिन मनवांछित फल की प्राप्ति के लिये श्रीविष्णु भगवान की पूजा करनी चाहिये। जो मनुष्य कठिन तपस्याओं के द्वारा फल प्राप्त करते हैं वह फल इस एकादशी के दिन क्षीर सागर में शेषनाग पर शयन करने वाले विष्णु भगवन को नमस्कार कर देने से मिल जाता है। जो मनुष्य शंख चक्रधारी विष्णु भगवान की शरण में जाता है उसे यम यातना नहीं मिलती।

जो मनुष्य अनायास इस एकादशी का व्रत करते हैं उन्हें यम के दुःख नहीं मिलते। जो विष्णु भक्त शिवजी की निन्दा करते हैं अथवाजो शिव भक्त विष्णु भगवान की निन्दा करता है वे दोनों नरक को जाते हैं। एक हजार अश्वमेध यज्ञ और सौ राजसूर्य यज्ञ का फल इस एकादशी के व्रत के फलके सोलहवें हिस्सेके बराबर भी नहीं होता है अर्थातइसएकादशी व्रतके समान संसार में अन्य दूसरा व्रत नहीं है। एकादशी के समान विश्व में ऐसी पवित्र तिथी नहीं हैं जो मनुष्य

एकादशी का व्रत नहीं करते हैं उन्हें पाप घेरे रहते हैं

इस एकादशी के व्रत से मनुष्य को स्वस्थ शरीर सुन्दर स्त्री तथा धन धान्य मिलता है तथा स्वर्ग की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य इस एकादशी के व्रत में रात्रि को जागरण करते मैं उन्हें बिना किसी कीरोकस्वर्ग मिलता है। जो मनुष्य इसएका-दशी का व्रत करते हैं उनके मातृ पक्ष के दस पुरुष पितृ पक्ष के दस पुरुष और स्त्री पक्ष के दस पुरुष विष्णु का वेष धारण करके तथा सुन्दर आभूषणों से युक्त होकर गरुड़ पर सवार होकर विष्णुलोक को जाते हैं।

जो मनुष्य एकादशी के दिन भूमि, गौअन्न, जल, उप वस्त्र छत्र आदि का दान करते हैं उन्हें यमराज के दर्शन नहीं मिलते हैं। दरिद्री मनुष्यों को भी यथा शक्ति कुछ दान देकर कुछ पुण्य अवश्य ही पैदा करना चाहिये जो मनुष्य तालाब, बगीचा, धर्मशाला, प्याऊ, अन्नक्षेत्र आदि बनवाते। उन्हें यम के दुःख नहीं मिलते। वह मनुष्य

इस लोक में स्वस्थ दीर्घायु वाले तथा धन धान्य से पूर्ण होकर सुख भोगते हैं।

हे राजन्! इन सबका सारांश यह है कि जो मनुष्य धर्म करते हैं। उन्हें सुख मिलता है और जो अधर्मी हैं उन्हें दुर्गती भोगनी पड़ती है।

अथ रमा एकादशी माहात्म्य

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन्! अब आप मुझे कार्तिक माह की कृष्णपक्ष की एकादशी की कथा सुनाइये। इस एकादशी का नाम क्या है। तथा इससे कौनसा फल मिलता हैं।

श्री कृष्ण बोले कि हे राजन्! कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम रमा है। इसकी कथा इस प्रकार है:—

प्राचीन काल में मुचुकुन्द नामक राजा राज्य करता था। उसके इन्द्र वरुण कुवेर विभीषण आदि मित्र थे। वह सत्यवादी तथा विष्णु भक्त था। उस का राज्य बिल्कुल अकंटक था उसके एक उत्तम चन्द्रभागा नाम की लड़की उत्पन्न हुई। उसने उस

लड़की का विवाह राजा चन्द्रसेन के पुत्रसोभन के साथ किया चन्द्रभागा सोचने लगी कि अब एकादशी समीप ही आगई है परन्तु मेरा पति अत्यन्त कमजोर है। इसलिये यह व्रत नहीं कर सकता परन्तु मेरे पिता की आज्ञा कठिन है।

जब दशमी आई तब राज्य में ढ़िंढोरा पिटा उसको सुनकर सोभन अपनी पत्नी के समीप गया और उससे पूछा कि हे प्रिये ! तुम मुझे कुछ उपाय बताओ क्योंकि यदि मैं व्रत करूंगा तो अवश्य ही मर जाऊंगा। इस पर चन्द्रभागा बोली हेप्राण नाथ ! मेरे पिता के राज्य में एकादशी के दिन कोई भी भोजन नहीं करता है। यहां तक हाथी घोड़ा ऊँट आदि भी तृण अन्न जल आदि ग्रहण नही करते फिर यहाँ मनुष्य कैसे भोजन कर सकते हैं यदि आप भोजन करना चाहते हैं तो यहाँ से दूसरे स्थान को चले जाइये। क्योंकि यदि आपइसी स्थान पर रहोगे तो आपको व्रत अवश्य ही करना पड़ेगा। इस पर सोभन बोला कि हे प्रिये आपका

कहना बिलकुल उत्तम है मैं व्रत अवश्य ही करूंगा भाग्य में जो लिखा है वह होवेगा ही।

ऐसा विचार करके उसने एकादशी का व्रत किया और वह भूख और प्यास से अत्यन्त पीड़ित होने लगा अब सूर्य भगवान भी अस्त होगये और जागरण के लिये रात्रि हुई। वह रात्रि सोभन को दुःख देनेवाली थी। दूसरेदिन प्रातः से पहले शोभन इस संसार से चल बसा। राजाने उसके मृतक शरीर को दहन करा दिया। चन्द्रभागा अपने पति की आज्ञानुसार अग्नि में दहन न हुई परन्तु पिता के घर में रहना उत्तम समझा।

रमा एकादशी के व्रत के प्रभाव से उसे मंदराचल पर्वत पर धन धान्य से युक्त तथा शत्रुओं से रहित एक उत्तम नगर प्राप्त हुआ। वह अटारी में स्वर्ण तथा मणियों के सिंहासन पर सुन्दर वस्त्र तथा आभूषणों से युक्त बैठा हुआ था वहाँ पर आभूषणों से युक्त गन्धर्व तथा अप्सरा उसकी स्तुति कर रहे थे।

एक समय मुचुकुन्द नगर में रहने वाला एक सोमशर्मानामकाब्राह्मण तीर्थ यात्रा के लिये निकला उसने घूमते २ उसको देखा। उस ब्राह्मण ने उसको अपने राजा का जमाई जानकर उसके निकट गया राजा सोभन ब्राह्मणको देखकर आसन से उठ खड़ा हुआ और अपने श्वसुर तथा स्त्री चन्द्रभागा की कुशलता को पूछने लगा सोमशर्मा ब्राह्मण बोला कि हे राजन्! हमारे राजा कुशल हैं। अबआप अपना बृतान्त बतलाइये। मुझे यह बड़ा आश्चर्य है कि ऐसा विचित्र और सुन्दर नगर जिसको न तो कभी मैंने सुना और न कभी देखा है आपको किस प्रकार प्राप्त हुआ! सोभन बोला कि हे ब्राह्मण यह सब कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की रमा एकादशी के व्रत का प्रभाव है। उसी से मुझे यह अनुपम नगर प्राप्त हुआ है परंतु यह अध्रुव क्यों है और ध्रुव किस प्रकार हो सकता है सो आप मुझे समझाइये। मैं आपके कहे अनुसार ही करूंगा। सोभन बोला कि ब्राह्मण! मैंने श्रद्धा

पूर्वक व्रत किया था उसके प्रभाव से मुझे यह नगर प्राप्त हुआ है इसलिये मैं इसे अध्रुव मानता हूँ। यदि तुम इस वृतान्त को राजा मुचुकुन्द की पुत्री चन्द्रभागा से कहोगे तो वह इसको ध्रुव बना सकती है।

ब्राह्मण ने वहाँ आकर चन्द्रभागा से सब हाल कहा तब राजकन्या चन्द्रभागा बोली कि हे ब्राह्मण ! आप क्या यह सब हाल प्रत्यक्ष देखकर आये हैं या अपना स्वप्न कह रहे हैं ? इस पर ब्राह्मण बोला कि हे पुत्री ! मैंने तेरे पति शोभनको तथा उसके नगर को आंखों से देखा है परंतु वह नगर अधूरा है। तू कोई ऐसा उपाय कर जिससे कि वह पूरा हो जाय। इसपर चन्द्रभागा बोली कि हे महाराज ! आप मुझे उस नगर में ले चलिये मैं अपने व्रत के प्रभाव से उस नगर को पूर्ण बना लूंगी।

चन्द्रभागा के वचनों को सुनकर वह शोम शर्मा ब्राह्मण उसको मंदराचल पर्वत के पास वामदेव के

आश्रम को ले गया। वामदेव ने उसकी कथा को सुनकर चंद्रभागा का मंत्रों से अभिषेक किया। चंद्रभागा मंत्रों तथा व्रत के प्रभाव से दिव्य देह धारण करके पति के पास चली गई। सोभन ने अपनी स्त्री चंद्रभागा को देखकर प्रसन्नतापूर्वक अपने वाम अंग में बैठाया। चंद्रभागा बोली हे प्राणनाथ! जब मैं अपने पिता के घर में आठ साल की थी तब ही से मैं यथा विधि एकादशी का व्रत करने लगी हूँ उन्ही व्रतों के प्रभाव से आपका यह नगर पूरा हो जावेगा और समस्त कर्मों से युक्त होकर प्रलय के अंत तक रहेगा। चंद्रभागा दिव्य रूप धारण करके तथा दिव्य आभूषणों तथा वस्त्रों से सज कर अपने पति के साथ आनन्द पूर्वक रहने लगी और सोभन भी आनन्द पूर्वक रहने लगा।

हे राजन! जोमनुष्य रमा एकादशी का माहात्म्य सुनते हैं वह अंत समय विष्णुलोक को जाते हैं।

ब्रह्माजी बोले कि हे मुनि श्रेष्ठ! अब आप

समस्त पापों को नाश करने वाली और मुक्ति की देने वाली प्रवोधिनी एकादशी का माहात्म्य सुनिये। भागीरथी गङ्गा मनुष्य को तब तक ही फल देती है जबतक कि कार्तिक मास की प्रवो-धिनी एकादशी नहीं आती। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी के व्रत का फल एक हजार अश्वमेघ सौ राजसूर्य यज्ञ के फल के समान होता है।

नारदजी ने पूछा कि हे पिता जी! एक संध्या को भोजन करने रात्रि में भोजन करने तथा पूरे दिन उपवास करने से क्या २ फल मिलता है? उसे आप मुझे समझाइयेब्रह्माजी बोले कि हे नारद! एक संध्या को भोजन करने से एक जन्म का, रात्रि में भोजन करने से दो जन्म के तथा पूरे दिन उपवास करने से ७ जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं। जिस वस्तु का त्रिलोकी में मिलना कठिन है वह वस्तु प्रवोधनी एकादशी के व्रतसे मिल जाती है प्रवोधिनी एकादशी के व्रत से सुमेरु पर्वत के

समान कठिन पाप क्षण मात्र में ही नष्ट हो जाते हैं। अनेक पूर्व जन्म के किये हुये बुरे कर्मों को यह प्रबोधिनी एकादशी का व्रत क्षणभर में ही नष्ट कर देता है। जो मनुष्य अपने स्वभावानुसार इस प्रबोधिनी एकादशी का विधि पूर्वक व्रत करते हैं उन्हें पूर्ण फल प्राप्त होता है।

हे मुनिवर! जो मनुष्य श्रद्धा पूर्वक थोड़ा भी पुण्य करते हैं वह उनका पुण्य पर्वत के समान अटल हो जाता है। जो मनुष्य अपने हृदय के अन्दर ऐसा ध्यान करते हैं कि मैं प्रबोधिनी एकादशी का व्रत करूंगा उनके सौ जन्म के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य प्रबोधिनी एकादशीके दिन रात्रिको जागरण करते हैं उनकी बीती हुई तथा आने वाली दस हजार पीढ़ियां विष्णुलोक में जाकर वास करती हैं और नरक में अनेक दुःखों को भोगते हुये पितर विष्णुलोकमें जाकर सुखभोगते हैं। ब्रह्म हत्या आदि महान् पाप भी प्रबोधनी एकादशी के रात्रि को जागरण करने से नष्ट

हो जाते हैं प्रबोधनी एकादशीको रात्रिको जागरण करने का फल अश्वमेघ आदि के यज्ञों के फल से अधिक होता है। समस्त तीर्थों में जाने तथा गौ, स्वर्ण भूमि आदि के दान का फल कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी के रात्रि के जागरण के फल के बराबर होता है।

इस संसारमें उसी आदमी का जीवन सुफल है जिसने प्रबोधिनी एकादशी के व्रत के द्वारा अपने कुल को पवित्र कर लिया है। संसार में जितने भी तीर्थ हैं वह सब प्रबोधिनी एकादशी के व्रत करने वाले के घर में रहते हैं। मनुष्य को समस्त कर्मों को त्यागते हुये भगवान् की प्रसन्नता के लिये कार्तिक मास की प्रबोधनी एकादशी का व्रत करना चाहिये। जो मनुष्य इस एकादशी के व्रत को करता है वह ज्ञानवान्, योगी तपस्वी तथा इन्द्रियों को जीतने वाला होता है क्योंकि यह एकादशी भगवान् विष्णु को अत्यन्त प्रिय है इसकेव्रत के प्रभाव से मनुष्य पुनः जन्म नहीं लेता

है। इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य के कायिक वाचिक और मानसिक पाप नष्ट हो जाते हैं। इस एकादशी के दिन जो भगवान् की प्राप्ति के लिये दान तप, होम यज्ञ आदि करते हैं उनको अक्षय फल मिलता है।

प्रबोधनी एकादशी के दिन भगवान् की पूजा करने से बाल, यौवन और वृद्धावस्था के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इस एकादशी की रात्रि को जागरण करने का फल चन्द्र ग्रहण के समय स्नान करने के फल से हजार गुना अधिक होता है। जो मनुष्य प्रबोधिनी एकादशी का व्रत नहीं करते उनके समस्त पुण्य व्यर्थ जाते हैं। इसलिये हे नारद! तुमको भी विधि सहित विष्णु भगवान् की पूजा करनी चाहिये जो मनुष्य कातिक मास के धर्म परायण होकर अन्य व्यक्तियों का अन्न नहीं खाते उन्हें चन्द्रायण व्रत का फल मिलता है। कातिक मास में भगवान् दान आदि से उतने प्रसन्न नहीं होते जितने कि शास्त्रों की

कथा सुनने से प्रसन्न होते हैं। कार्तिक मास में जो मनुष्य भगवान् की कथा को थोड़ा या बहुत पढ़ते या सुनते हैं उन्हें सौ गौ के दान का फल मिलता है। जो मनुष्य प्रबोधनी एकादशी के दिन विष्णु की कथा सुनाते हैं उनको सातों द्वीपों के दान का फल मिलता है।

इस पर नारदजी बोले कि हे ब्रह्माजी! अब आप इस एकादशी के व्रत का विधान कहिये और कैसा व्रत करने से कौनसा पुण्य मिलता है वह भी समझाइये। ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! इस एकादशी के दिन मनुष्य को ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिये और नदी, तालाब कूआ आदि पर स्नान करके व्रत का नियमसे पालन करना चाहिये। उस समय भगवान से विनय करनी चाहिये कि हे भगवन्! आज मैं निराहार रहूँगा और दूसरे दिन भोजन करूंगा। इसलिये आप मेरी रक्षा करें। उस रात को भगवान् के गीत नाच बाजे तथा कथा आदि से बिताना चाहिये। प्रबोधनी एका-

दशी के दिन कृपणता को त्यागकर बहुत से पुष्प फल अगर धूप आदि से भगवान की आराधना करनी चाहिये। शंख के जल से भगवान को अर्घ देना चाहिये। जो मनुष्य अगस्त्य पुष्प से भगवान की पूजा करते हैं उनके सामने इन्द्र भी हाथ जोड़ता है। कार्तिक मास में जो बिल्व पत्र से भगवान की पूजा करते हैं उन्हें अन्त में मुक्ति मिलती है।

कार्तिक मास में जो मनुष्य तुलसीजी से भगवान की पूजा करता है उसके जन्म२के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य इस मासमें श्रीतुलसी जी के दर्शन करते हैं या छूते हैं या ध्यान करते हैं या कीर्तन करते हैं या पोषण अथवा सेवा करते हैं वे हजार कोट युग तक भगवान के घर में रहते हैं। जो मनुष्य तुलसी का पेड़ लगाते हैं उनके कुटुम्ब में जो पैदा होते हैं वे प्रलय के अन्त तक विष्णुलोक में रहते हैं। जो भगवान की कदम्ब पुष्प से पूजा करते हैं वह यमराज के दुःखों को

नहीं पाते । समस्त मनवांछाओं को पूरा करने वाले भगवान कदम्ब फूल को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं यदि उनकी कदम्ब के फूलों से पूजा की जाय तो फिर बात ही क्या है । जो मनुष्य बकुल और अशोक के फूलों से भगवान की पूजा करते हैं वे अनन्त काल तक शोक से रहित होते हैं । मनुष्य विष्णु भगवान की सफेद और लाल कनेल के फूलों से पूजा करते हैं वे पूजा के फल से सौ गुना फल अधिक पाते हैं । जो भगवान की शमी पत्र से पूजा करते हैं । वे इस संसार सागरसे तर जाते हैं । जो मनुष्य चम्पक पुष्प से भगवान की पूजा करते हैं वे आवा गमन के चक्र से छूट जाते हैं। जो मनुष्य स्वर्ण का बना हुआ केतकी पुष्प भगवान पर चढ़ाते हैं उनके करोड़ों जन्मके पाप नष्ट हो जाते हैं । जो मनुष्य भगवान की पीले और रक्त स्वर्ण कमल के सुगन्धित फूलों से पूजा करते है उन्हे श्वेत दीप में स्थान मिलता है ।

इस प्रकार रात्रि में भगवान् की पूजा करके प्रातःकाल नदी में स्नान करना चाहिये। स्नान करने के पश्चात भगवान की प्रार्थना करते हुए घर आकर भगवान की पूजा करनी चाहिये इसके बाद व्रत पूर्ति के लिये ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये और दक्षिणा देकर मीठे वाक्यों के द्वारा क्षमा करानी चाहिये। इसके उपरान्त भोजन गौ और दक्षिणा से गुरू की पूजा करनी चाहिये और ब्राह्मणों को भूयंसी दक्षिणा देकर नियम को छोड़ना चाहिये। ब्राह्मणों को यथा शक्ति दक्षिणा देनी चाहिये! जिस ब्राह्मण को रात्रि में भोजन करावे उसे स्वर्ण सहित बैल दान करना चाहिये। जो मनुष्य यात्री स्नान करते हैं उन्हें दही और शहद दान करना चाहिये। जो मनुष्य फल की आशा करते हैं उन्हें फलका दान करना चाहिये तेल की जगह घी और घी की जगह दूध और अन्नों में चावल दान करना चाहिये। जो मनुष्य इस व्रतमें भूमिपर शयन करते हैं। उन्हें शय्यादान

करना चाहिये। जो मौन धारण करते हैं उन्हें स्वर्ण सहित तिल दान करना चाहिये। जो मनुष्य बालों को धारण करते हैं उन्हें दर्पण दानकरना चाहिये जो मनुष्य कार्तिक मास में उपाहन धारण नहीं करते उन्हें उपाहन दान करना चाहिये जो इस मास में नमक त्यागते हैं। उहें शक्कर दान करनी चाहिये जो मनुष्य नित्य प्रति देव मन्दिरों में दीप जलाते हैं उन्हें स्वर्ण या तांबे के दीये को घी तथा बत्ती सहित दान करना चाहिये मनुष्य चातुर्मास्य व्रत में किसी वस्तु को त्याग देते हैं उन्हें उस दिन से पुनः ग्रहण करनी चाहिये जो मनुष्य प्रबोधनी एकादशी के दिन विधि पूर्वक व्रत करते हैं उन्हे अनन्त सुख मिलता है और अन्त में स्वर्ग को जाते हैं।

जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत को पूरा कर देते हैं। उन्हें फिर दुबारा जन्म नहीं मिलता। जो मनुष्य इस एकादशी के माहात्म्य को सुनता व पढ़ता है उसे अनेक गौ दान का फल मिलता है।

अथ पद्मिनी एकादशी माहात्म्य

धर्मराज युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन्! अब आप अधिक [लोंद] मास शुक्ल पक्ष की एकादशी के बारे है बतलाइये। उस एकादशी का नाम क्या हैं तथा उसके व्रत का विधि क्या है।

श्रीकृष्ण बोले कि हे राजन्! अधिक (लोंद) मास की एकादशी जो कि अनेक पुण्यों को देने वाली में उसका नाम पद्मिनी है। इस एकादशीके व्रत से मनुष्य विष्णुलोकको जाता है। हे राजन्। इस विधि को मैंने सबसे प्रथम नारदजी से कहा था यह विधि अनेक पापों को नष्ट करने वाली तथा मुक्ति और भक्ति प्रदान करने वाली है।

दशमी के दिन व्रत को शुरू करना चाहिये और कांसे के पात्र में भोजन, मास, मसूर, चना कोदो, शहद, शाक, और पराया अन्न दशमी के दिन नहीं खाना चाहिये। इस दिन हविष्य भोजन करना चाहिये और नमक भी नहीं खाना चाहिये उस रात्रिको भूमि पर शयन करना चाहिये। और

ब्रह्मचर्य पूर्वक रहना चाहिये। एकादशी के दिन प्रातःकाल उठ कर नित्यक्रिया से निवृत होकर दातुन करना चाहिये और बारह कुल्ला करके पुण्य क्षेत्र में स्नान करने चला जाना चाहिये। उस समय गौमय मृतिका तिल कुश तथा आमल की चूर्ण से विधि पूर्वक स्नान करना चाहिये। स्नान करने से प्रथम शरीर में मिट्टी लगाते हुये उसी से प्रार्थना करनी चाहिये। हे मृत्तिके! तुमको भगवान् ने सतवाह रूप धारण करके निकाला है। ब्रह्माजी ने तुम्हें दिया है और कश्यपजी ने तुमको मन्त्रों से पूजा है इसलिये तुम मुझे भगवान की पूजा करने के लिए शुद्ध बनादो। समस्त औषधियों से पैदा हुई गौके पेट में स्थित रहने वाली और पृथ्वी को पवित्र करने वाली तुम मुझे शुद्ध करो। ब्रह्मा के थूक से पैदा होने वाली रात्रि! तुम मेरे शरीर को छूकर मुझे पवित्र करो। हे शंख चक्र गदाधारी देवों के देव! जगन्नाथ! आप

मुझे स्नान के लिये आज्ञा दीजिये। इसके उपरान्त वरूण मन्त्र को जपकर स्नान करना चाहिए। पवित्र तीर्थों के अभाव में उनका स्मरण करते हुए किसी तालाव में स्नान करना चाहिए।

स्नान करने के पश्चात् संध्या तर्पण करके मंदिरमें जाकर भगवान की पूजा करनी चाहिए। स्वर्ण की राधा सहित भगवान की:प्रतिमा या पार्वती सहित महादेवजी की प्रतिमा या लक्ष्मी सहित विष्णु जी की प्रतिमा बनाकर पूजन करे। धान्य के ऊपर मिट्टी या ताबे का घड़ा रखना चाहिए। उस घड़े को वस्त्र तथा गन्ध आदि से सुशोभित करके उसके मुंह पर तांबे, रूपा या सोने का पात्र रखना चाहिए। उस पात्र पर भगवान की प्रतिमा को रख कर धूप, दीप, नैबेद्य, पुष्प, चन्दन आदि से उनकी पूजा करनी चाहिए। उसके उपरांत भगवान के सन्मुख नृत्य गान आदि करे। उस दिन असत्य भाषण तथा गुरु और ब्राह्मण की निन्दा नहीं कर

नी चाहिए। अधिक (लौंद) मास की शुक्ल पक्ष की पद्मिनी एकादशी का व्रत निर्जल करना चाहिए। यदि मनुष्य शक्ति रहित हो तो उसे जल पान या क्षुधाहार से व्रत करना चाहिये। प्रति प्रहर मनुष्य को भगवान या महादेवजी की पूजा करनी चाहिये। भगवान को पहले प्रहर में नारियल दूसरे में विल्वफल, तीसरे में सीताफल और चौथे में सुपारी, नारंगी अर्पण करना चाहिए। इससे पहले प्रहर में अग्नि होम का, दूसरे में बाजपेय यज्ञ का, तीसरे में अश्वमेघयज्ञ का, चौथे में राजसूय यज्ञ का फल मिलता है। इस फल से अधिक संसार में न यज्ञ है न विद्या है न तप है न दान है एकादशी के व्रत करने वाले मनुष्यको समस्त तीर्थ और यज्ञों का फल मिल जाता है। इस तरह से सूर्योदय तक जागरण करना चाहिये। इस प्रकार जो मनुष्य बिधि पूर्वक भगवान की पूजा तथा व्रत, करते हैं उनका जन्म सफल हो जाता है।

हे राजन् ! मैंने आपको एकादशी के व्रत का पूरा विधान बतलादिया अब जो पद्मिनी एकादशी का भक्ति पूर्वक व्रत करते हैं उनकी कथा को कहता हूँ। यह सुन्दर कथा पुलस्त्यजी ने नारदजी से कही थीं।

एक समय कार्तवीर्य ने रावणको कारागार में बन्द कर रखा। उसको पुलस्त्यजीने कार्तिवीर्य की विनय करके छुड़ाया। इस घटना को सुनकर नारद जी ने पुलस्त्यजी से पूछा हे महाराज ! उस महा वीर रावण जिसने समस्त देवताओं सहित देवराज इन्द्र को जीतलिया था उसको कार्तवीर्य ने किस प्रकार जीता सो आप मुझे समझाइये। इस पर पुलस्त्य जी बोले कि हे नारद जी ! आप पहले कार्तवीर्य की उत्पत्ति सुनो।



त्रेतायुग में महिष्मती नामक नगरी में उपवंश कृतवीर्य नामक राजा राज्य करता था। उस

राजा के सौ रानी थीं उनमें से किसी के भी राज्य भार लेने वाला योग्य पुत्र नहीं था। उस राजा ने आदर सहित पंडितों को बुलवाया और पुत्र की प्राप्ति के लिये यज्ञ किये परन्तु सब असफल रहे। जिस प्रकार दुःखी मनुष्य को भोग नीरस मालूम पड़ते हैं उसी प्रकार उसको भी राज्य पुत्र बिना सुख देने वाला प्रतीत नहीं होता था। अन्त में वह तप के द्वारा ही सिद्धियों को प्राप्त जानकर तपस्या करने के लिये बन को चला गया। उसकी स्त्री हरिश्चन्द्र की पुत्री प्रमदा वस्त्राभूषणों को त्यागकर अपने पति के साथ गन्ध मादन पर्वत पर चली गई। उस स्थान पर इन लोगों ने दस सहस्त्र वर्ष तक तपस्या की परंतु सिद्धि प्राप्त न हो सकी। राजा के शरीर में केवल हड्डियाँ रह गई। यह देखकर प्रमदा ने बिनय सहित महासती अनुसुया से पूछा कि मेरे पतिदेव को तपस्या करते हुये दस सहस्त्र वर्ष बीत गये पन्रतु अभी तक भगवान प्रसन्न नहीं हुए हैं

जिससे मुझे पुत्र प्राप्त हो सके। अब आप मुझे कोई व्रत बतलाइये जिससे मुझे पुत्र की प्राप्तिहो

इस पर अनुसुयाजी बोली कि अधिक [लोंद] मास जो कि बत्तीस महीने बाद आता है उसमें दो एकादशी होती हैं जिसमें शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम पद्मनी और कृष्णपक्ष की एकादशी का नाम परमा है। उसके जागरण और व्रत करने से भगवान तुम्हें अवश्य ही पुत्र देंगे। इसके पश्चात अनुसुयाजी ने व्रतकी विधि बतलाई रानी ने अनुसुयाजी की बतलाई हुई विधि के अनुसार एकादशी का व्रत और रात्रि में जागरण किया। इससे भगवान विष्णु उस पर अत्यन्त प्रसन्न हुए रानी ने कहा कि आप एक वरदान मेरे पति को दीजिये प्रमदा का बचन सुनकर भगवान बोले कि हे प्रमदे! मल मास मुझे बहुत प्रिय है। जिसमें एकादशी मुझे सबसे अधिक प्रिय है। जिसमें इस एकादशी का व्रत तथा रात्रि जागरण तुमने

विधि पूर्वक किया। इसलिये मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। इतना कहकर भगवान विष्णु राजा से बोले कि हे राजेन्द्र ! तुम अपनी इच्छा के अनुसार वर माँगो। क्योंकि तुम्हारी स्त्री ने मुझको प्रसन्न किया है।

भगवानकी सुन्दर बाणी को सुन कर राजा बोला कि हे भगवन् ! आप मुझे सबसे श्रेष्ठ, सबके द्वारा पूजित तथा आपके अतिरिक्त देव दानव, मनुष्य आदिसे अजेय उत्तम पुत्र दीजिये। भगवान् उससे तथास्तु कहकर अन्तर्धान हो गये। वह दोनों अपने राज्य को वापिस आये उन्हीं के यह कीर्तवीर्य उत्पन्न हुए थे। वह भगवान के अतिरिक्त सबसे अजेयथे इसी से उन्होंने रावण को जीत लिया थां।

भगवान बोले कि हे धर्मराज ! यह मैंने अधिक (लोंद) मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत कहा है। भगवान का बचन सुन कर युधिष्ठर ने भी अपने कुटुम्ब सहित इस व्रत को किया।

अथ परमा एकादशी माहात्म्य

युधिष्ठर बोले कि हे जनार्दन ! आप अधिक(लौंद) मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम तथा उसके व्रत की विधि बतलाइये। श्रीकृष्ण बोले कि हे राजन् ! इस एकादशी का नाम परमा है। इसके व्रत से समस्त पापनष्ट होजाते हैं इसका व्रत पूर्वोक्त बिधि से करना चाहिये और भगवान नरोत्तम की धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिये। इस एकादशी के विशय की एक मनोहर कथा जो कि महर्षियों के साथ काम्पिल्य नगरी में हुई थीं कहता हूँ।

काम्पिल्य नगर में सुमेधा नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसकी स्त्री पवित्रा अत्यन्त पवित्र तथा पतिव्रता थी। वह किसी पूर्व जन्म के कारण अत्यंत दरिद्र थी। उसे भिक्षा मागने पर भी नहीं मिलती थी वह सदैव वस्त्रों से रहित होते हुए भी अपने पति की सेवा करती रहती थी वह अतिथि को अन्न देकर स्वयं भूखी रह जाती, थी।

जब सुमेधा ने अपनी स्त्री का अत्यन्त दुर्बल देखा तो बोला कि हे प्रिये ! जब मैं धनवानों से धन माँगता हूँ तो वह कुछ मुझे नहीं देते। गृहस्थी केवल धन से चलती हैं अब मैं क्या करूं। इसलिये यदि तुम्हारी राय हो तो मैं परदेश जाकर कुछ उद्यम करूं। इस पर उसकी स्त्री विनीत भाव से बोली कि पतिदेव ! मैं तो आपकी आज्ञा का पालन करती हूँ। पति अच्छा और बुरा जो कुछ भी कहे पत्नी को वही करना चाहिये। मनुष्य कोजो पूर्व जन्म के कर्मों का फल मिलता है। सुमेरू पर्वत पर रहते हुए भी मनुष्यको बिना दानके स्वर्ण नहीं मिलता। पूर्व जन्म में जो मनुष्य विद्या और भूमिदान करते हैं उन्हें ही इस जन्म में विद्या और भूमि मिलती है। विधाता भाग्य में जो कुछ लिख देता है वह टल नहीं सकता। यदि कोई मनुष्य दान नहीं करता तो भगवान उसे केवल अन्न ही देते हैं। इसलिये आपको इसी जगह रहना चाहिये

क्योंकि मैं आपका वियोग नहीं सह सकती।

एक समय कौण्डिन्य मुनि उस जगह आये। उनको आते देख कर सुमेधा ने स्त्री सहित प्रणाम किया और बोले--हम आज धन्य हैं। उन्होंने उनको आसन तथा भोजन दिया। भोजन देने के पश्चात् पवित्रा बोली कि हे मुनि! आप मुझे दरिद्रता का नाश करने का उपाय बतलाइये। मेरे भाग्य से आप आगये हैं। मुझे पूर्ण निश्चय है कि अब मेरी दरिद्रता शीघ्रही नष्ट हो जावेगी। अतः आप हमारी दरिद्रता नष्ट करने के लिये किसी व्रत को बतलाइये। इस पर कौण्डिन्य मुनि बोले कि मल मास की कृष्ण पक्षकी परमा नाम एकादशी के व्रत से समस्त पाप, नष्ट हो जाते हैं।

इस व्रत में नाच, गाना आदि सहित रात्रि जागरण करना चाहिये। कुवेर को महादेवजी ने इसी व्रत के करने से धनाधिपति बना दिया था। इसी व्रत के प्रभावसे सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र को,

पुत्र, स्त्री और राज्य प्राप्त हुआ था।

वह मुनि फिर बोले कि हे ब्राह्मणी! पंच-रात्रि व्रत इससे भी अधिक उत्तम है। परमा एकादशी के दिन प्रातःकाल नित्य कर्म से निवृत्त होकर पंच रात्रि व्रत आरम्भ करना चाहिये। जो मनुष्य पाँच दिन तक निर्जल व्रत करते हैं वे अपने माता पिता और स्त्री सहित स्वर्ग लोक को चले जाते हैं। इस व्रत में जो घोड़े का दान करते हैं उन्हें तीनों लोक दान करने का फल मिलता है। जो मनुष्य उत्तम ब्राह्मण को तिल दान करते हैं वे तिल की संख्या के बराबर विष्णुलोक में रहते हैं। जो घी का पात्र दान करते हैं वे सूर्य लोक को जाते हैं। हे पवित्रे! तुम अपने पति के साथ इसी व्रत को करो। इससे तुम्हें सिद्धि प्राप्त होगी कौण्डिन्य मुनि के कहे अनुसार उन्होंने परमा एकादशी का पाँच दिन तक व्रत किया। व्रत समाप्त होने पर उसने देखा कि राजकुमार उसके

सामने खड़े हैं। राजकुमार उसको एक ग्राम देकर अपने महल को चले गये। वह दोनों व्रतके प्रभाव से इस लोक में अनन्त सुख भोग कर अन्त में स्वर्गलोक को गये।

श्रीकृष्ण बोले कि हे राजन्! जो मनुष्य परमा एकादशी का व्रत करता है उसे समस्त तीर्थों दानों आदि का फल मिलता है। जिस प्रकार संसार में दो पैरों वालों में ब्राह्मण, चार पैरों वालों में गौ, देवताओं में इन्द्रराज श्रेष्ठ हैं उसी प्रकार महीनोंमें अधिक [लौंद] मास उत्तम है। इस महीने में पंच रात्रि अत्यन्त पुण्य देने वाली है। दुर्बल मनुष्य को एक व्रत करना चाहिये। जो मनुष्य अधिक मास स्नान तथा एकादशी व्रत नहीं करते उन्हें आत्मघात का पाप लगता है यह मनुष्य योनि बड़े पुण्यों से मिलती है इसलिये मनुष्यको एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिये।

॥ इति एकादशी व्रत माहात्म्य कथा समाप्तम्॥

ईश्वर प्रार्थना

ॐ जै जगदीश हरे,स्वामी जै जगदीश हरे ।
भक्त जनों के सङ्कट च्चण में दूर करे ॥ओ०॥
जो ध्यावे फल पावे दुख विनशे मनका ।
सुख संपत्ति घर आवे कष्ट मिटे तनका॥ ओ० १॥
मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किस की ।
तुम बिन और न दूजा आस करूं जिसकी॥ओ०२॥
तुम हो पूर्ण परमात्मा तुम अन्तरयामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ॥ ओ० ३ ॥
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता ॥ ओ० ४ ॥
तुम हो एक अगोचर सबके प्राण पति ।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती!॥ओ०॥
दीन बन्धु दुख हर्ता तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ॥ ओ० ६ ॥
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तों की सेवा ॥ ओ०७ ॥

आरती श्रीबद्रीनारायणजी की



पवन मन्द सुगन्ध शीतल हेम मन्दिर शोभितम् । निकट गङ्गा बहत निर्मल श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ शेष सुमिरन करत निशदिन धरत ध्यान महेश्वरम् । श्रीवेद ब्रह्मा करत स्तुति श्रीबद्री० ॥
शक्तिगौरिगणेश शारदनारद मुनिजनउच्चारण । जो ध्यान अपार लीला श्रीबद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
इन्द्र चन्द्र कुवेर धुनि करें धूप दीप प्रकाशितम् । सिद्ध मुनिजन करत जैं जै बद्रींनाथ विश्वंभरम् ॥
दत्तके भरत नल कौतुक ज्ञान गन्धर्व प्रकाशितम् । श्रीलक्ष्मीकमला चंवरढोरें श्रीबद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
कैलाश में एकदेव निरंजन शैल शिखर महेश्वरम् । श्रीराजा युधिष्ठिर करत स्तुति श्रीबद्रीनाथ० ॥
श्रीबद्रीनाथ के पंचरत्न पढ़त पाप विनाशनम् ॥ कोटि तीर्थ भवेत पुण्य प्राप्यते फलदायकम् ॥



॥ यमुनाजी की आरती ॥



जय जय श्री जमुने मा जय जय श्री जमुने ॥जय॥
श्री गोलोक निवासिन वासिन ब्रज रमने ।
सूर्य सुता संज्ञा उर जन्मी,जय २ अवतरने ॥जय॥
उत्तर दिशि कर पावन, पावन तब करने ।
पुनि कलिन्द मन मर्दन अर्दन स्वीकरने ॥ जय ॥
दहत देख तन गिरवर आरत, स्तुति करने ।
तिय अपराध क्षमाकर रसमय श्रीपतने ॥ जय ॥
तज तन तरणि समर्पित जम्बू तरु गवने ।
छिन्न भिन्न कर पाहन दाहन अघ हरने ॥ जय ॥
ब्रज लीला सर रंजित माथुर कुल भरने ।
श्री बिश्रान्त विहारिण तारण दुख हरने ॥ जय ॥
श्री नवनीत प्रिया उर आनन्द चित्त चरने ।
रास रसिक मण्डित पण्डितजनश्रवत तरते ॥जय॥
सायंकाल करे जो आरति,मनवच क्रम करने ।
है यमफंद निवृती बृती प्रभु गरने ॥ जय ॥ इति ॥

आरती श्री कृष्णचन्द्रजी की



आरती युगल किशोर की कीजै । राधातनमनधन न्यौछावर कीजै ॥टेक॥ रवि शशि कोटि बदन की शोभा ताहि निरख मेरौ मन लोभा० ॥ १ ॥ गौर श्याम मुख निरखत रीझै । प्रभु को स्वरूप नयन भर पीजै० ॥ २ ॥ कंचन थार कपूर की बातीं । हरि आये निर्मल भई छाती ॥ आ० ॥ फूलन की सेज फूलन की माला । रत्न सिंहासन बैठे नन्दलाला ॥ आ० ४ ॥ मोरमुकुट करमुरली सोहै । नटवर वेष देख मन मोहे ॥ आ० ५ ॥ ओढ्यो नीलपीत पटसारी कुंजबिहारी गिरवरधारी ॥ आ० ६ ॥ श्रीपुरुषोत्तम गिरवर धारी । आरती करत सकल ब्रजनारी ॥ आ० ७ ॥ नन्दनदन वृषभानु किशोरी । परमानन्दस्वामी अविचलजोड़ी आरती युगल किशोर की कीजै ॥८॥

मुद्रक—बाबू सोहनलाल गुप्ता, हिन्दी पुस्तकालय प्रेस, मथुरा ।

मुद्रक—बाबू सोहनलाल गुप्ता हिन्दी पुस्तकालय प्रेस मथुरा

